फरवरी-२०१९ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

फरवरी-२०१९

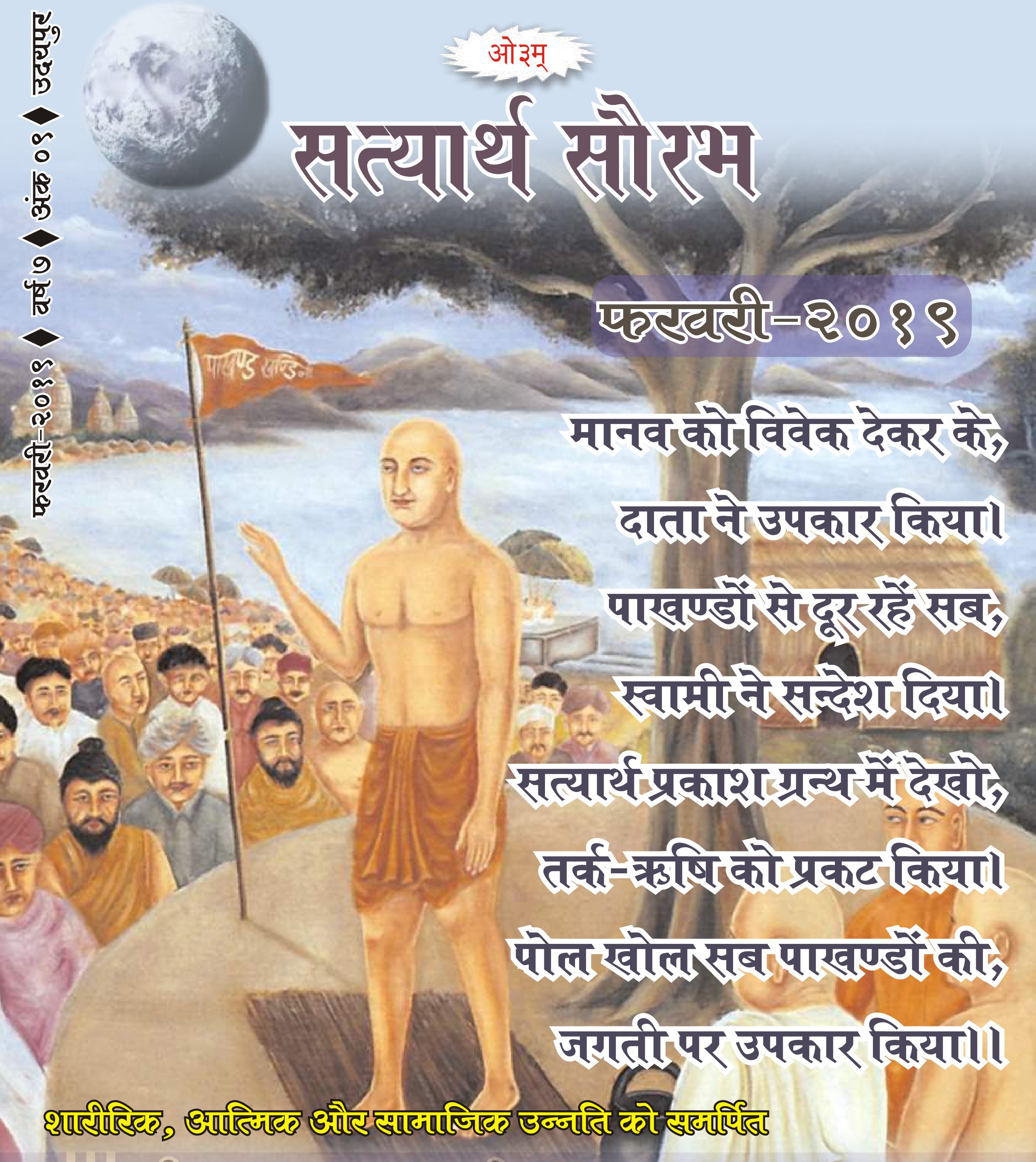

मानव को विवेक देकर के,
दाता ने उपकार किया।
पाखण्डों से दूर रहें सब,
स्वामी ने सन्देश दिया।
सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में देखो,
तर्क-ऋषि को प्रकट किया।
पोल खोल सब पाखण्डों की,
जगती पर उपकार किया।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८६

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
माघ शुक्ल द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

February - 2019

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

०७ चमत्कार से स्वास्थ्य लाभ मिथ्या धारणा

१० महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट ब्रह्मचर्य एवं अध्ययन-अध्यापन

०४ महाशय धर्मपाल को पद्म भूषण
०५ वेद सुधा
१३ मांसाहार निकृष्टतम कर्म
१५ ईसाई मिशनरियों का मायाजाल
१८ ब्राह्मसमाज और आर्यसमाज
२१ ईश्वर की उपासना भय से नहीं
२३ गाजियाबाद से गाजीपुर
२४ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/१९
२५ नहीं रहे चक्रकीर्ति सामवेदी
२८ स्वास्थ्य- मधुमेह-घरेलू उपचार
२९ कथा सरित- विलक्षण भिक्षा
३० सत्यार्थ पीयूष- एकेश्वरवाद

समाचार २६
हलचल २७

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०९

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

आर्य जगत् के गौरव

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल को पद्म-भूषण सम्मान

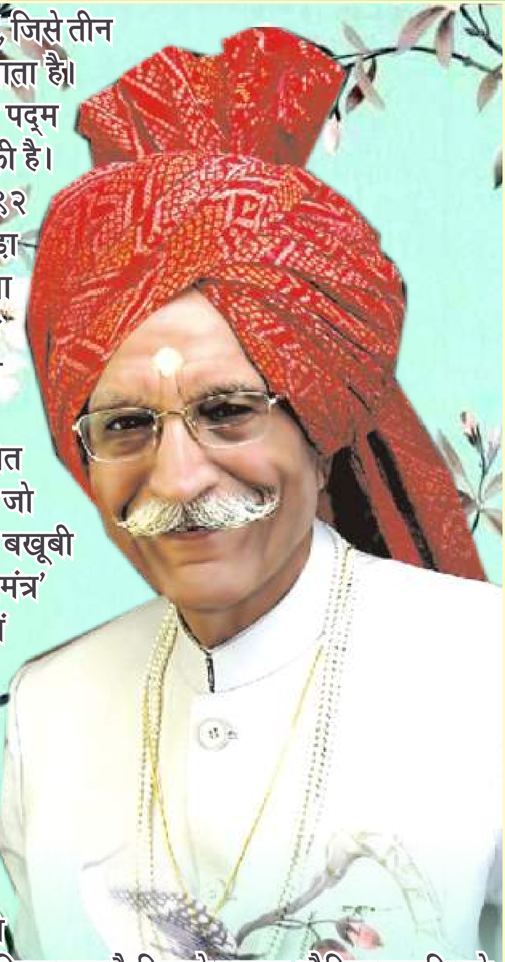

पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जिसे तीन श्रेणियों पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री में बाँटा जाता है। भारतरत्न के बाद देश का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्म भूषण ही है। वर्ष २०१९ के पद्म पुरस्कारों की घोषणा हो चुकी है। पद्म पुरस्कारों के लिए २०१९ में भारत सरकार को ४९९९२ नामांकन मिले थे। पिछले वर्ष के मुकाबले नामांकन का ये आंकड़ा १४००० ज्यादा है। इन पुरस्कारों के लिए २०१६ से पूरी प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया था। वर्ष २०१९ के पुरस्कारों में ४ को पद्म विभूषण, पद्म भूषण १४ और पद्मश्री ९४ लोगों को दिया गया है।

महाशय धर्मपाल जी देश के विभाजन के समय अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में सियालकोट से दिल्ली आये। परन्तु मनुष्य वही है जो धारा के विपरीत तैर के दिखा दे, और यह कार्य महाशय जी ने बखूबी करके दिखा दिया। महाशय जी की कर्मगाथा 'सफलता के मूलमंत्र' किसी के भी मन में उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा के सृजन में सक्षम है। महाशय जी ने यह प्रमाणित कर दिखाया है कि बिना शार्टकट तथा बेईमानी का आश्रय लिए भी भौतिक ऊँचाइयों को स्पर्श किया जा सकता है साथ ही यह भी कि आध्यात्मिक उन्नति के बिना यह भौतिक समृद्धि भी व्यर्थ है। महाशय जी की विशेषता चारों ओर बिखरा वैभव नहीं वरन् उनके मन की अमीरी तथा उच्च आध्यात्मिक स्तर है जिसके कारण भौतिक उन्नति को निस्सार समझने वाले महाशय जी के दर से कोई खाली हाथ नहीं जाता। पद्मभूषण जैसे सम्मानित पुरस्कार के लिए महाशय जी का चयन निश्चित ही उपयुक्त है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी न्यासीगण तथा विश्वभर के आर्यजन, आर्यजगत् के श्रद्धा के केन्द्र इस महामना को इन गौरव के क्षणों में श्रद्धा से नमन करते हैं।

– अशोक आर्य, उदयपुर

ओ३म्

वेद सुधा

जगत् का राजा

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम। - ऋग्वेद १०/१२१/३, यजुर्वेद २३/३,२५/११

(यः) जो (महि-त्वा) महिमा से (प्राणतः नि-मिषतः जगतः) प्राणी और नि-मेषी जगत् का (एकः इत्) एक ही (राजा वभूव) राजा हुआ/हुआ है। (यः ईशे) जो ईशत्व कर रहा है (अस्य+द्वि-पदः चतुः-पदः) इस [जगत्] के दोपाये, चौपाये को/का। [हम उस] (कस्मै देवाय) आनन्दस्वरूप देव के लिए (हविषा विधेम) हवि से विधारण करें, प्रेमपूर्वक समर्पित हो जाएँ।

१. जितनी भी ऐसी योनियाँ हैं जिनके नासिका है ओर जो श्वास प्रश्वास के रूप में सांस लेते हैं, प्राणिजगत् में सम्मिलित हैं। प्राणिजगत् की समस्त योनियाँ चिरस्थायी हैं। ऐसी योनियों की आयु इस प्रकार निर्धारित है कि जिस-जिस योनि का जितना-जितना स्वाभाविक ब्रह्मचर्य है उससे चौगुनी उस योनि की आयु है। इसके बहुत से अपवाद भी हैं। प्राणिजगत् में ऐसी भी योनियाँ हैं जिनकी आयु सैंकड़ों, हजारों, लाखों वर्ष की होती है। मनुष्य भी आयुर्योग की साधना करके सैंकड़ों, हजारों वर्ष जी सकता है।

जितनी देर आँखों के पलक बन्द करने वा खोलने में लगती है उतने समय को निमेष कहते हैं। जिन योनियों का जन्म जीवन-मरण निमेषों तक सीमित है उन योनियों को निमेष जगत् कहते हैं। असंख्य योनियाँ ऐसी हैं जो निमेषमात्र में जन्मती, जीती और समाप्त हो जाती हैं। असंख्य योनियाँ हैं जिनकी आयु सैकण्डों की है। अनेक योनियाँ हैं जिनकी आयु मिनटों की है। बहुत सी योनियाँ जिनकी आयु घण्टों की है। जितनी भी योनियाँ ऐसी हैं जो निमेषों, सैकण्डों, मिनटों ओर घण्टों में समाप्त हो जाती हैं निमेषजगत् में सम्मिलित हैं।

प्राणिजगत् तथा निमेषजगत् में कितनी योनियाँ हैं, इसकी निश्चित गणना अभी तक नहीं की जा सकी है। जिसने वा जिन्होंने चौरासी लाख योनियों की गणना की थी उनके श्रम की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता है। किन्तु यह गणना कभी की पार की जा चुकी है। मैंने आबू पर एक अमेरिकन दम्पती की लिखी हुई योनिविज्ञान के विषय में लगभग बीस जिल्दों का अवलोकन किया था, जिनमें शायद डेढ़ वा दो करोड़ योनियों का सचित्र वर्णन था। उस अमेरिकन दम्पती ने अपना सारा जीवन सम्पूर्ण पृथिवी पर विचर कर योनियों की गणना करने में व्यतीत किया था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में अवकाश ग्रहण करते हुए उन्होंने लिखा था कि अभी करोड़ों योनियाँ ऐसी होंगी जिनकी वे खोज नहीं कर पाए थे। सम्पूर्ण हिरण्यगर्भ में तो न जाने कितने शंख योनियाँ होंगी।

उन जिल्दों से एक बात असन्दिग्धरूपेण यह सिद्ध होती थी जितनी योनियाँ हैं वे सब एक अनन्त असीम जंजीर की उतार चढ़ाव युक्त कड़ियाँ हैं, जो नीचे से ऊपर तक शृंखलाबद्ध होती चली गई हैं। लेखकों ने डार्विन की उस मान्यता का सविज्ञान अनुमोदन किया था कि योनियाँ नीचे से ऊपर तक विकासक्रम से निर्मित हैं, किन्तु उन्होंने उसके उस सिद्धान्त का सफलता के साथ खण्डन किया था कि योनियों के रूपान्तरण से ऊपर की योनियाँ बनी हैं। योनियों के विवरण में लेखकों ने योनियों की आयुओं का उल्लेख करते हुए आधा सैकण्ड तक की आयु का जिक्र किया है।

इन करोड़ों योनियों में से एक भी योनि अनायास वा निरर्थक नहीं है। इस अनन्त अपार हिरण्यगर्भ में जितनी भी योनियाँ हैं उनमें से प्रत्येक योनि का अपना-अपना एक निश्चित और निर्धारित मिशन है। किन्तु द्विपाद और चतुष्पाद योनियों का विशेष स्थान और महत्व है। गाय, भैंस, अश्व आदि पशु चतुष्पाद

हैं। मनुष्य और पक्षी द्विपाद् हैं। हिरण्यगर्भ में जिस प्रकार द्यौ, पृथिवी, सूर्य, चन्द्र आदि प्राकृतिक देवों के अवलोकन से प्रभु की महान् महिमा की अनुभूति होती है उसी प्रकार उससे भी कहीं अधिक परिचय मिलता है उस लीलाधर की लीला का, करोड़ों योनियों की रचना के अवलोकन से। बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी किसी भी योनि की रचना को देखिए, अनायास ही प्रभु की अद्भुत करीगरी की प्रशंसा करते बनती है।

मछली की योनि का ही अध्ययन कीजिए। कांच के पात्र वा गिलास में पानी भरकर उसमें एक विद्युद्-रेखा मछली छोड़ दीजिए और रातभर उसके प्रकाश में पढ़िए, लिखिए और अपना कामकाज कीजिए। लाखों प्रकार की मछलियाँ, हजारों प्रकार के कुत्ते, लाखों प्रकार की चिड़ियाएँ, सैंकड़ों प्रकार की गौएँ, सैंकड़ों प्रकार के जुगनू, असंख्य प्रकार के जलचर, नभचर। मानव शरीर की ही रचना का टुक अध्ययन कीजिए- कैसी अगम्य और अद्भुत रचना।

२. नीचे से लेकर ऊपर तक उतार-चढ़ाव के साथ करोड़ों योनियों की युक्तियुक्त, अतिशय वैज्ञानिक तथा सुनियोजित रचना को देखकर सहसा मुँह से निकाल पड़ता है, कैसा कुशल करीगर है वह प्रभु, जिसने 'बिन कर योनि करी विधि नाना'। कुम्भकार मिट्टी-पानी मिलाकर चक्र को घुमा-घुमा कर अनेक खिलौने बनाता है। उन पर रंग-बिरंगे रंग भरता है। कुम्भकार खिलौने बेचता हुआ आवाज लगाता है, 'यह लो रानी दो आने में। यह लो राजा दो आने में। गाय, घोड़ा, बिल्ली, खरगोश, हिरन, चीता, शेर सब दो आने में।' आप नए-नए खिलौने खरीदते जाते हैं और कुम्भकार की कुशलता की प्रशंसा करते जाते हैं, 'कैसी-कैसी आकृतियाँ बनाई है कुम्भकार ने। केवल जान डालने की कसर है। यदि कोई इनमें जान डाल दे तो ये मूर्तियाँ बोलने लग जाएँ।'

ऐसा कुम्भकार है, एक ऐसा कुशल कारीगर है, एक ऐसा त्वष्टा है जिसके मिषमात्र से प्रकृति में निर्धारित प्राकृतिक नियमों के द्वारा अनायास ही सजीवता से युक्त बोलती हुई मूर्तियाँ तैयार होती रहती हैं इतनी सुन्दर और मूल्यवान कि जिनका मूल्य चुकाए न चुकाया जा सके। कैसे हैं वे लोग जो नकली, निर्जीव और मूक मूर्तियों के बनाने वाले की तो मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं, पर असली, सजीव और बोलती हुई मूर्तियों के बनाने वाले की कभी प्रशंसा नहीं करते हैं। उड़ते हुए पक्षियों के पंखों की रचना का अध्ययन करके वैज्ञानिकों ने वायुयान बनाया तो सारा संसार उनकी प्रशंसा करने लगा। किन्तु जिस असल को देखकर वायुयान का अविष्कार किया गया, उस असल के निर्माता की प्रशंसा करने में लोग अलसाते हैं। कोई-कोई तो ऐसे हैं जो असल-निर्माण के निर्माता की सत्ता से भी इंकार करते हैं। वे नकल-निर्माता के अस्तित्व की आवश्यकता स्वीकार करते हैं, पर असल-निर्माता के अस्तित्व की आवश्यकता अनुभव नहीं करते हैं।

प्रत्येक योनि न्यारी-न्यारी और प्रत्येक योनि के अपने-अपने सुख भोग न्यारे-न्यारे। ऐसा समझना भूल है कि योनिविशेष में ही आनन्द है। नहीं, नहीं, प्रत्येक योनि में अपना-अपना भोग और अपना-अपना आनन्द है। यह ठीक है कि योनि-योनि में आनन्द की मात्रा का भेद है पर प्रत्येक योनि में आनन्द है अवश्य। योनि में ही नहीं, प्रकृति के कण-कण में आनन्द अन्तर्निहित है। ऐसा क्यों न हो, आनन्दस्वरूप भगवान् जो इस सबमें रमे हैं। सृष्टि के कण-कण में आनन्द है, सृष्टि में निवास करने वाली योनि-योनि में आनन्द है क्योंकि उन सबमें आनन्दमय भगवान् व्याप रहे हैं, उन सबमें आनन्दमय भगवान् का आनन्द हिलोरें मार रहा है।

लेखक- स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
साभार- वेदालोक

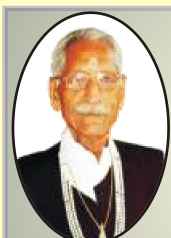
कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सुख की सरिता बहे हमेशा,
पाएँ हर पल हर्ष।
मनचाही मंजिल मिले,
निष्कर्ष दे संघर्ष।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए
१५००० रु.

आत्म निवेदन

क्या आवश्यकता है अस्पताल की?

विश्वभर में ७ अरब लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए डाक्टर तैयार करने के लिए, फिर इलाज देने के लिए और इलाज के लिए दवाइयों के निर्माण के लिए तथा चिकित्सा के क्षेत्र में नयी नयी तकनीकों व दवाइयों के लिए होने वाले शोध के लिए अरबों नहीं खरबों रुपये प्रतिवर्ष खर्च किये जाते हैं। अगर ये बीमारियाँ किसी स्थान विशेष पर जाने से, किसी प्रकार का धागा डोरा बाँधने से अथवा किसी तथाकथित 'ब्लैस्ड' का फोटो पास रखकर उसकी स्तुति-प्रार्थना करने से ठीक होती हों तो हमारा कथन कि स्वास्थ्य के क्षेत्र पर खरबों रुपये खर्च करने की आवश्यकता नहीं है, मान लेना चाहिए। दीपावली के दिन पड़ौस में रहने वाले एक दम्पति मिलने

आये। उच्च शिक्षित एवं सम्पन्न परिवार है। चर्चा हमारे परिचित रोगी की चल पड़ी जिनकी चिकित्सा में सम्पूर्ण संभव प्रयत्न तथा लाखों रुपये व्यय करने पर भी अपेक्षाकृत शीघ्र परिणाम नहीं मिल रहे थे। आखिर चिकित्सा विज्ञान की भी अपनी सीमाएँ हैं। वे तपाक से बोले अरे कहाँ भटक रहे हैं स्वास्थ्य लाभ एक रात्रि दूर है। हमारे जिज्ञासा प्रकट करने पर बोले कि फलां-फलां माता का स्थान है बस एक रात वहाँ गुजारिये दूसरे दिन पूर्ण स्वस्थ। जिस कान्फीडेंस से उन्होंने यह बात कही, आश्चर्य की बारी हमारी थी। वे तुरन्त कहने लगे कि 'दो-तीन मास पूर्व मुझे खांसी हो गयी। महीनों एलोपैथिक इलाज लिया आराम नहीं हुआ, फिर एक बाबाजी के स्थान पर गया। वहाँ एक बूढ़ी औरत ने मुझसे पकौड़े मंगवाकर पीठ पीछे फिकवा दिए और कहा पीछे मुड़ कर मत देखना। दूसरे दिन गला बिलकुल ठीक हो गया।' हमें तो यह आश्चर्य था कि अगर इतने शिक्षित लोगों की यह मनोदशा है तो अशिक्षित लोगों का क्या दोष। हमने उनसे कहा कि गला तो आपका अभी भी खराब है, बोले हाँ डाक्टर ....की दवा ले रहा हूँ कोई लाभ नहीं हो रहा, सोचता हूँ कि पुरानी वाली जगह हो आऊँ। हमारा कहना था कि पहले ही वहाँ क्यों नहीं गए डाक्टर के पास क्यों गए? सीधी-सी बात है कि वे कहते चाहे जो हों उनको भी भरोसा नहीं है। जब वे अन्त में उक्त प्रकार के स्थानों अथवा प्रयोगों का सहाय लेते हैं तो कभी-कभी किसी-किसी को जो लाभ होता है वह वस्तुतः अब तक ली गयी दवा के कारण होता है और श्रेय अंधविश्वास को मिल जाता है। और ऐसे लोग उस अंधविश्वास के चलते-फिरते विज्ञापन बन जाते हैं।

इन्हीं विज्ञापनों का प्रभाव है कि ऐसे स्थानों पर भीड़ लगी रहती है। अभी पिछले दिनों एक चैनल पर एक कार्यक्रम आ

रहा था। सैंकड़ों एकड़ जमीन पर एक तथाकथित बाबा ने अपना अधिकार कर रखा था। उनके पास नाना प्रकार के रोगी आते थे पर उनके पास हर मर्ज की एक ही दवा थी वह था उनके द्वारा तथाकथित रूप से अभिमंत्रित जल, जिसकी मालिश से सब ठीक हो रहे थे। जब उनकी वीडियोग्राफी कर रहे संवाददाता ने अपने कंधे के दर्द को ठीक करने की प्रार्थना की तो बार-बार प्रयत्न करने पर भी असफल रहे फिर अपनी खीज मिटाते हुए उन्हें पुनः आने की सलाह देकर पिंड छुड़ाने का प्रयत्न किया। बात तो तब है जब ऐसे व्यक्ति कितने भी बीमार हो जायँ पर अस्पताल न जायँ, पर ऐसा होता नहीं है।

अंधविश्वास का यह मकड़जाल केवल भारतवर्ष में ही फैला है ऐसा नहीं है। अपने आपको शिक्षितों के सिरमौर कहने वाले यूरोप से लेकर अमेरिका तक इसकी जड़ें फैली हुयीं हैं यहाँ तक कि रोम ने तो इसे संस्थागत रूप दे दिया है। जी हाँ वेटिकन सिटी इस २१वीं शताब्दी में भी चमत्कारों पर न केवल विश्वास करता है बल्कि उन्हें आधिकारिक स्तर पर मान्यता देकर महिमामण्डित करता है। भारत में पाल दिनाकरण ने चंगाई के इस धंधे से ५००० करोड़ रुपये की संपत्ति खड़ी कर ली है। इस पर पूर्व में हम एक सम्पादकीय में लिख चुके हैं। वेटिकन, किस प्रकार यीशुमसीह के चंगाई के चमत्कारों की शृंखला शिथिल न हो जाय इस हेतु प्रयत्नशील रहता है, यह देखने वाली बात है। सर्वज्ञात है कि अनेक वैज्ञानिकों को तर्कसम्मत बात कहने पर ईसाई चर्च द्वारा अनेकानेक यातनाएँ झेलनी पड़ीं थीं। आज जब विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है तब भी कैथोलिक चर्च वहीं खड़ा प्रतीत होता है। बल्कि जानबूझकर चिपटा खड़ा है और अंधविश्वासों को बढ़ावा दे रहा है ऐसा स्पष्ट होता है।

चमत्कार करने वाले ईसाइयों को मरणोपरान्त सन्त का दर्जा दिया जाता है। जहाँ इस सन्त पदवी को प्रदान करने में पचासों वर्ष लगते थे कभी-कभी तो सदियाँ, वहीं अब इस में तीव्रता आयी है। पोप फ्रांसिस ने अभी बीते अक्टूबर में एक साथ ७ महानुभावों को सन्त की पदवी प्रदान की है। सन्त की पदवी प्रदान किये जाने की प्रक्रिया संक्षेप में पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं। इस पदवी के पात्र वे होते हैं जिन्होंने मानव कल्याण अथवा इसी प्रकार परोपकार में अपना जीवन बिताया हो (मानव कल्याण के कार्य कौन से हैं और वे किये हैं या नहीं, यह निर्णय चर्च का होता है)। उनके मरने के पश्चात् उनसे कोई ऐसा चमत्कार जुड़े जिसे तर्क अथवा चिकित्सा विज्ञान किसी भी प्रकार स्पष्ट न कर सके अर्थात्

वह चमत्कार केवल उस शख्शियत की कृपा का परिणाम हो तब वह व्यक्ति सन्त की पदवी प्राप्त करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ जाता है। कहा जाता है कि पोप इस चमत्कार की गहन छानबीन करता है। जब यह चमत्कार सिद्ध हो जाता है तब उस व्यक्ति का बीटीफिकेशन किया जाता है। उसके बाद उनके नाम के आगे 'ब्लैस्ड' लगा दिया जाता है। अर्थात् वह ईश्वर का विशेष कृपापात्र है और अब उसकी कृपा मात्र से यथा उसके फोटो के स्पर्श से असाध्य रोगी पल भर में चंगा हो जाता है।

'ब्लैस्ड' घोषित किये जाने के पश्चात् सन्त पदवी प्राप्त करने से पूर्व कम से कम एक और चमत्कार की पुष्टि होना आवश्यक है। बड़े आश्चर्य की बात है कि चिकित्सा विज्ञान ने जिस काल में इतनी उन्नति कर ली है वहाँ इस प्रकार के अंधविश्वास को बढ़ावा देने को केवल आस्था के नाम पर पोषित नहीं कर सकते, परन्तु सारे संसार में हो यही रहा है और तर्कशील कहे जाने वाले मूक दर्शक बने हुए हैं। भारत में मदर टेरेसा को वेटिकन द्वारा यह सन्त पदवी प्रदान की गयी। जिस चमत्कार के कारण उनका बीटीफिकेशन हुआ उसे जान लें। कलकत्ता से ३५६ किमी दूर एक छोटा सा गाँव है दानग्राम। मोनिका बेसरा नामक एक महिला को पेट में एक ट्यूमर हुआ जिसका इलाज बालूघाट के राजकीय अस्पताल के डाक्टर रंजन मुस्ताफी ने किया। दावा यह किया गया कि

लाख इलाज के पश्चात् भी उस महिला का ट्यूमर ठीक नहीं हुआ परन्तु जब मदर टेरेसा के चित्र युक्त लाकेट को उस ट्यूमर से स्पर्श कराया गया तो अचानक वह ट्यूमर गायब हो गया। जबकि डाक्टर का कहना है कि यह ट्यूमर कैंसर का नहीं था। रोगी ने ९-१० महीने दवा खायी उससे वह ठीक हुयी।

प्रारम्भ में मोनिका का पति भी स्पष्ट तौर पर यही कहता रहा

कि उसकी पत्नी डाक्टरी इलाज से ठीक हुयी है। वस्तुतः यह सारा मामला लोभ लालच के चलते धर्मांतरण की जिन कुचालों का प्रयोग ईसाई मिशनरी करते हैं, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। जब मदर टेरेसा की संस्था ने मोनिका से किये वादे पूरे नहीं किये तो मोनिका ने भी आरोपों की झड़ी लगा दी। पर अब मोनिका के पास २ एकड़ जमीन है। उसके मकान के आगे ही एक चर्च है जिस में वे प्रार्थना आदि करते हैं। जितने प्रश्न मदर टेरेसा की मानवसेवा और उनकी कार्यप्रणाली को लेकर लगाए जाते हैं (नरक का फरिश्ता- क्रिस्टोफर हिचेन्स) उनसे कम प्रश्न उक्त चमत्कार को लेकर नहीं उठाये जाते। पर वेटिकन ने इन सबको नजरअंदाज कर मदर का बीटीफिकेशन कर दिया। क्योंकि चर्च को जीसस की चंगाई की प्रथा को निरन्तर करना था। अब मदर के नाम एक और चमत्कार जुड़ना था वह मिला ब्राजील में। १९९७ में एक ब्राजीलियन व्यक्ति का ब्रेन ट्यूमर मदर की कृपा से ठीक हुआ। एड्रीनो दो वर्ष से बीमार था उसके ७ ब्रेन ट्यूमर थे मरणासन्न था उसने और उसकी पत्नी ने 'मरता क्या न करता' के भाव से मदर के लाकेट को एड्रीनो के सर पर रख प्रार्थना की और चमत्कार हो गया ऐसा दावा किया गया। ९ दिसम्बर १९९७ को जब एड्रीनो सोकर उठा तो उसे तेज सिरदर्द था। चिकित्सकों ने तत्काल सर्जरी का निश्चय किया उसे जब ऑपरेशन के लिए ले जाया गया तो मार्सीलियो एन्ड्रीनो ने बताया कि उसका सिरदर्द बिलकुल गायब हो गया और वह पूर्ण शान्ति का अनुभव कर रहा है। चिकित्सकों ने दूसरे दिन तक इंतजार करने का निश्चय किया। दूसरे दिन

जब जाँच की गयी तो ट्यूमर नदारद मिले। तीन दिन में मरणासन्न एड्रीनो पूर्णतः ठीक हो गया कि जैसे कभी बीमार ही नहीं था।

इस चमत्कार को पोप फ्रांसिस ने मदर के दूसरे चमत्कार के रूप में मान्यता दी और अंततोगत्वा मदर को सन्त की पदवी प्रदान की। वेटिकन ने हाल ही में एक दो नहीं, सात व्यक्तियों को सन्त की पदवी प्रदान की है जिसका विवरण और व्याख्या आलेख को लम्बा करना मात्र होगा। भारतीय तर्कशील सोसाइटी के सनथ इडामरूकू ने मदर के चमत्कार के बारे में सही कहा था-

Mr. Edamaruku has debunked the first finding, wondering how a woman could be cured by a photo of the nun placed on her stomach, when there was evidence to suggest that medicines treated her. Today, he says, "most people don't want to challenge the nun any more because of her image as somebody who worked for the poor"."If you question Mother Teresa you are seen as anti-poor. I have nothing against her, **but miracle-mongering is not scientific.**"

चंगाई के इन तथाकथित दावों को जो लोग मानते हैं और महिमामण्डित करते हैं अगर वे भद्र पुरुष हैं तो उनको अपना व अपने आत्मीयों का इलाज इन फोटो व लॉकेटों से ही करना चाहिए। पर ऐसा होता नहीं है वे आवश्यकता पड़ने पर अपना इलाज चिकित्सकों से कराते हैं और अंधविश्वास फैला कर अपना धंधा चलाते हैं।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट ब्रह्मचर्य एवं अध्ययन-अध्यापन

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ हैं - ईश्वरीय चिन्तन, वेदाध्ययन और वीर्यरक्षण। वेद पढ़ने वाले विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य और विद्यार्थी का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। शुक्राचार्य ने कहा है- 'विद्यार्थी ब्रह्मचारी स्यात्' अर्थात् विद्या पढ़ने वाले को ब्रह्मचर्यपालन करना आवश्यक है। बिना मन और इन्द्रियों पर संयम किए वेद का ज्ञान प्राप्त करना सम्भव नहीं है तथा वेदशास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को समझे बिना ईश्वर-प्राप्ति कठिन है। इसलिए 'एकै साधे सब सधे' इस लोकोक्ति के अनुसार इन्द्रिय-संयम द्वारा वीर्य रक्षा करना ही बाद में ब्रह्मचर्य का अर्थ लोक में प्रचलित हो गया। इसलिए आज ब्रह्मचर्य शब्द से मुख्य रूप से वीर्यरक्षा सम्बन्धी अर्थ का ग्रहण किया जाता है।

हम जो भोजन करते हैं, उसके सार-भाग से रस बनता है। रस का परिपाक होकर, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और सातवीं धातु वीर्य का निर्माण होता है। स्त्रियों में यह धातु रज के रूप में बनती है। यह सब धातुओं का सार है। इसी की रक्षा करना प्रत्येक विद्यार्थी, युवक एवं युवती का कर्तव्य है। सब सुधारों का सुधार ब्रह्मचर्य है। प्रखर बुद्धि, चमकता हुआ मुखमण्डल, उन्नत वक्षःस्थल, सुगठित शरीर, मस्तानी चाल, गम्भीर और प्रभावशाली वाणी, आकर्षक व्यक्तित्व, उत्साह, स्फूर्ति, शौर्य, धैर्य इत्यादि सभी गुणों की खान ब्रह्मचर्य का पालन ही है। ब्रह्मचारी के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। अथर्ववेद ११/५/१९ में कहा है -

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।'

'ब्रह्मचर्यरूप तप के द्वारा विद्वानों ने मृत्यु को दूर भगा दिया।' भीष्म पितामह की आयु महाभारत के युद्ध में १७५ वर्ष की थी। उन्होंने १० दिन तक अकेले ही सेनापति का पद संभालते हुए घमासान संग्राम किया। अन्त में १०वें दिन अर्जुन तथा अन्य योद्धाओं के तीरों से आहत होकर

शर-शैय्या पर लेट गए। मृत्यु बार-बार आना चाहती है, परन्तु ब्रह्मचारी भीष्म उसे ठोकर मारते हैं और कहते हैं- 'अभी सूर्य दक्षिणायन में है। सूर्य के उत्तरायण में आने पर ही मैं प्राण त्याग करूँगा, इससे पूर्व नहीं।' यह सब ब्रह्मचर्य का ही तो प्रताप था।

महर्षि दयानन्द जी जालन्धर में ब्रह्मचर्य पर व्याख्यान दे रहे थे। उनका व्याख्यान सुनकर रईस विक्रमसिंह ने कहा- 'स्वामी जी! आपने आज ब्रह्मचर्य की बहुत प्रशंसा की, परन्तु आपमें तो वह बल दिखाई नहीं दे रहा? स्वामी जी यह बात सुनकर चुप रहे। जब सरदार विक्रमसिंह जी बग्घी में बैठकर अपने घर को जाने लगे तो स्वामी दयानन्द जी ने चुपके से आकर एक हाथ से बग्घी का पहिया पकड़ लिया। गाड़ीवान ने घोड़ों को चाबुक

मारे, परन्तु घोड़े टस से मस नहीं हुए। दोबारा चाबुक लगाए जाने पर घोड़ों ने जोर लगाया। उनके दोनों अगले पैर खड़े हो गए, परन्तु गाड़ी फिर भी नहीं हिली। सरदार विक्रमसिंह ने पीछे मुड़कर देखा- स्वामी दयानन्द जी एक हाथ से गाड़ी का पहिया पकड़े मुस्करा रहे थे। विक्रम सिंह को अपनी भूल का अनुभव हुआ। उन्होंने नीचे उतरकर स्वामी जी के पैर पकड़ लिये और अपनी बात के लिए क्षमा-याचना की।

व्यक्ति के जीवन में धन-सम्पत्ति, विद्या तथा अन्य वस्तुओं की प्राप्ति के अनेक अवसर आते हैं परन्तु युवावस्था एक ही बार आती है। १४ से २५ वर्ष की आयु में यौवन रूप धन आने लगता है। किसी के घर में धन-सम्पत्ति आए तो उसे प्रयत्नपूर्वक संभालकर सुरक्षित रखा जाता है, जिससे चोर-डाकू उसे चुरा न सकें। इसी प्रकार प्रत्येक नवयुवक और युवती को इस अमूल्य यौवन की सुरक्षा करने का यथासम्भव यत्न करना चाहिए। इसकी सुरक्षा करने पर २५ वर्ष में पुरुष और १८ वर्ष में स्त्री पूर्ण युवा हो जाते हैं।

वीर्य शरीर का राजा है। जैसे गन्ने का रस पीड़ लेने पर खोई शेष बच जाती है और तिलों से तेल निकालने पर केवल खली ही अवशिष्ट रहती है, इसी प्रकार ब्रह्मचर्य-रक्षा के बिना शरीर निस्तेज, निर्बल और हड्डियों का पिंजर बन जाता है। जैसे दीपक में तेल होने पर ही प्रकाश होता है, ऐसे ही सुरक्षित वीर्य की ऊर्ध्वगति होकर वह विचाराग्नि का ईंधन बन बुद्धि को प्रकाशित करता है।

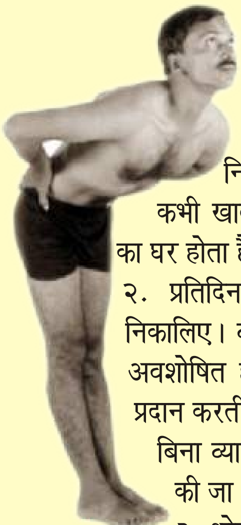

ब्रह्मचर्य-पालन के लिए नियम

१. प्रातःकाल जागरण से लेकर रात्रि तक सारे समय को विभिन्न कार्यों के लिए निश्चित करके उसके अनुसार चलना चाहिए। कभी खाली नहीं बैठें, क्योंकि खाली मन ही शैतान का घर होता है। दिनचर्या नियमित हो।

२. प्रतिदिन व्यायाम के लिए कुछ समय अवश्य निकालिए। व्यायाम से शरीर की शक्ति पुनः शरीर में अवशोषित होकर शरीर को स्फूर्ति, कान्ति, बल, तेज प्रदान करती है।

बिना व्यायाम के ब्रह्मचर्य-पालन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

३. भोजन सात्विक होना चाहिए। भोजन में मिर्च, मसाले, तेल, खटाई तथा अभक्ष्य पदार्थों का परित्याग करें। इसी भाँति शराब, भाँग, गांजा, अफीम, हेरोइन इत्यादि मादक वस्तुओं से भी बचना चाहिए।

४. मन को विक्षिप्त करने वाले दृश्य, चलचित्र, नृत्य, गीत, उपन्यास, कथा-कहानी को देखना और पढ़ना छोड़ दें।

५. ब्रह्मचर्य-रक्षण में यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का एकान्त दर्शन, सम्भाषण व स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा को प्राप्त होवें।

६. कुसंगति से बचें। यदि कोई चरित्रवान् साथी नहीं मिलता तो अपने माता-पिता के साथ ही रहें। किसी महापुरुष का जीवन-चरित्र अथवा चरित्र को ऊँचे उठाने वाले ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

७. जहाँ तक हो सके, एकान्त में न रहें। अपना प्रत्येक पल सत्कार्य में लगायें और अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति के लिए अहर्निश प्रयत्न करें।

८. सादगी का जीवन व्यतीत करें। फैशन, शृंगार तथा अन्य विलासिता की वस्तुयें ब्रह्मचर्य में बाधक होती हैं। याद रहे- सादगी सदाचार की जननी तथा शृंगार व्यभिचार का दूत है।

९. २५ वर्ष से पूर्व विवाह न करें। क्योंकि ब्रह्मचर्य का नाश करने वाला जितना बाल विवाह है, उतना अन्य नहीं।

१०. ईश्वर चिन्तन ही ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ है इसीलिये प्रतिदिन सन्ध्या, जप, स्वाध्याय करना चाहिये।

अध्ययन-अध्यापन विधि

अध्ययन-अध्यापन एक ऐसी प्रणाली है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है। इससे वह जान पाता है कि वह क्या कर रहा है तथा आगे क्या करेगा? जैसे मनुष्य को वस्त्र धारण करने की आवश्यकता होती है ठीक वैसे ही विद्या रूपी वस्त्रों से सुसज्जित मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती शिक्षा का उद्देश्य बताने हेतु भर्तृहरि जी के एक श्लोक का प्रमाण उद्धृत करते हैं-

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः॥

जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील-स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि नियमपालनयुक्त और जो अभिमान, अपवित्रता से रहित, अन्य मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारीजनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित, वेदविहितकर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिये आठ वर्ष के हों, तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हों, उनसे शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त, धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। (सत्यार्थप्रकाश)

'विद्यार्थी ब्रह्मचारी स्यात्' छात्र को ब्रह्मचारी बनना होता है।

ब्रह्मचारी के दो ही भोजन हैं, एक विद्या और दूसरा परमात्मा। किन्तु इस भोजन को कभी-कभी खा लेने मात्र से वह ब्रह्मचारी नहीं बन सकता है। जिस प्रकार विलासी मनुष्य अपने स्वाद के लिए नए से नए व्यञ्जनों को बनाता रहता है, रूप का विलासी नए से नए शृंगारों में तल्लीन रहता है, उसी प्रकार विद्याविलासी विद्यार्थी को अपनी विद्या एवं ब्रह्मचर्य में सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। तब ही वह विद्यार्थी ब्रह्मचारी बन सकेगा। विद्यार्थी के लिए शील शिक्षा को पूर्णतया धारण करना आवश्यक है।

पाठशालाओं के सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं- 'पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर ग्राम वा

नगर रहै। सब को तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिये। उनके माता-पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता-पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्रव्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रक्खें। जब भ्रमण करने को जायें तब उनके साथ अध्यापक रहें, जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य-प्रमाद करें।।'

अध्ययन-अध्यापन की परम्परा को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीयसमुल्लास में 'अथ पठनपाठन विधिः' नाम से उल्लेख किया है। अध्ययन-अध्यापन की परम्परा को ऋषि परम्परा अर्थात् आर्ष परम्परा का नाम दिया है। ऋषि लोग अपने ग्रन्थों को सबके लिए सुगमता और सरलता के निमित्त लिखते हैं। और पढ़ने वालों को भी सरलता होती है। इसलिए स्वामी जी लिखते हैं कि- ' महर्षि लोगों का आशय जहाँ तक हो सके, वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है। क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने, वहाँ तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्पलाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।' (सत्यार्थप्रकाश)

आर्ष परम्परा को स्वामी दयानन्द जी ने एक क्रमबद्ध प्रकार से पढ़ने का दिशा-निर्देश दिया है। जिसमें क्रमशः पाणिनिमुनिकृत शिक्षा, अष्टाध्यायी, धातुपाठ, उणादिकोष, अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति, महाभाष्य पढ़ावें। इस प्रकार से अध्ययन-अध्यापन करने में अधिक समय नहीं लगता।

इन ग्रन्थों के समय के विषय में स्वामी जी कहते हैं कि-'जो बुद्धिमान्, पुरुषार्थी, निष्कपटी, विद्यावृद्धि के चाहने वाले नित्य पढ़ें-पढ़ावें, तो डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महाभाष्य पढ़ के तीन वर्ष में पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौकिक शब्दों का व्याकरण से पुनः अन्यशास्त्रों को शीघ्र सहज में पढ़-पढ़ा सकते हैं। किन्तु जैसा बड़ा परिश्रम व्याकरण में होता है, वैसा श्रम अन्य शास्त्रों में करना नहीं पड़ता और जितना बोध इनके पढ़ने से तीन वर्षों में होता है उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत चन्द्रिका, कौमुदी, मनोरमादि के पढ़ने से पचास वर्षों में भी नहीं हो सकता, क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है, वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्योंकर हो सकता है?' (सत्यार्थप्रकाश)

व्याकरण महाभाष्य पढ़ने के उपरान्त यास्कमुनिकृत निघण्टु, पिंगलाचार्यकृत छान्दोग्रन्थ, मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, विदुरनीति आदि, पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त आदि, फिर उपनिषदें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, ब्राह्मणग्रन्थ अर्थात् ऐतरेय, शतपथ, साम, गोपथ तथा इनके बाद चारों वेदों को पढ़ना चाहिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा पद्धति एवं ब्रह्मचर्य पालन से मनुष्य तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त तक की विद्या को प्राप्त कर सकता है तथा त्रिविध दुःख अर्थात् आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक दुःखों से दूर होकर इहलौकिक एवं पारलौकिक सुखों का आनन्द भोग सकता है। हम सभी को ऋषि प्रणीत ग्रन्थों का अध्ययन कर एवं ब्रह्मचर्य द्वारा अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

- शिवदेव आर्य
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
(उत्तराखण्ड)-२४८००७
चलभाष- ८८१०००५०९६

मांसाहार निकृष्टतम कर्म

संसार में मांसाहार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। हमारे देश में विदेशी धर्मों के आगमन और वाममार्ग के प्रचलन के कारण मांसाहार की प्रवृत्ति बढ़ी है। मांसाहार के कारण ही संसार में हिंसक मनोवृत्ति का विस्तार हो रहा है। जब निर्दयी रूप से पशु को मारा जाता है तब उसके मुँह से निकलने वाली चीत्कार सुनकर दयाभाव जाग्रत नहीं होने के कारण मनुष्य का स्वभाव निष्ठुर और हिंसक हो जाता है। इसी कारण आज संसार में हिंसा को बल मिल रहा है।

संसार में प्राणियों को सबसे प्रिय अपने प्राण होते हैं। सभी जीव अपने प्राणों की रक्षा चाहते हैं। मांसाहार के अनेक दोष होते हैं। आयुर्वेदानुसार मांस खाने से शरीर थुलथुल हो जाता है। क्योंकि मांस खाने से शरीर में मांस ही बढ़ता है। मांसाहारी व्यक्ति काम करते-करते जल्दी थक जाता है। उसे क्रोध बहुत जल्दी आता है। उसका शरीर सुडौल नहीं रहता उसकी याददास्त क्षीण हो जाती है। मांस-घास, लकड़ी से पत्थर से उत्पन्न नहीं होता यह जीव की हत्या करने पर ही मिलता है जो लोग कुटिलता और असत्य भाषण में प्रवृत्त होकर सदा मांस भक्षण किया करते हैं उन्हें राक्षस समझना चाहिए। इसीलिए प्राचीनकाल में ऐसे लोगों की अलग ही बस्ती रहा करती थी।

आयुर्वेद में मांस न खाने वालों की प्रशंसा की है और बताया है कि जो सुन्दर रूप, सुडौल शरीर, पूर्ण आयु, उत्तम बुद्धि और स्मरणशक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, उन लोगों को मांसाहार और हिंसा का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। जो मनुष्य न मांस खाता, न हिंसा करता और न पशु बलि चढ़ाता, न कुर्बानी करता, और न दूसरे से हिंसा करवाता है, वह सम्पूर्ण प्राणियों का मित्र है, उसका कोई भी प्राणी तिरस्कार नहीं करता। वह सबका विश्वासपात्र हो जाता है। जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, उसे अवश्य ही दुःख उठाना पड़ता है।

जो जीवित रहने की इच्छा रखने वाले प्राणियों को मारकर अथवा उनके स्वयं मर जाने पर उनका मांस खाता है वह उन प्राणियों का हत्यारा ही माना जाता है। जो मांस खरीदता है वह धन से, जो खाता है वह उपभोग से तथा जो शस्त्र प्रहार करके या फांसी लगाकर पशुओं की हिंसा करता है। इस प्रकार से जो प्राणियों का वध होता है जो मांस तो नहीं खाता पर खाने वाले का अनुमोदन करता है, वह भाव दोष से भक्षण दोषी माना जाता है। जो मांस के लिए पशुओं की हत्या करता है वह मनुष्य जाति में निम्नतम व्यक्ति है। जो अज्ञानी पुरुष धर्म के नाम पर पशुओं की बलि चढ़ाते हैं वे लोग दोज़ख और नरकगामी होते हैं। वाममार्गियों ने बलि शब्द का अर्थ विकृत कर दिया है बलि का अर्थ होता है अन्न और बलिदान का अर्थ है पशु पक्षियों को अन्न का दान करना। इसे बलिदान कहा जाता है। कुर्बानी का भी यही अर्थ

है अपने पास जो कुछ है उसको लोक कल्याण के लिए कुर्बान (दान) करना चाहिए न कि पशुओं की हत्या करना। शब्दों के अर्थ का अनर्थ मांसाहारी लोगों द्वारा किया गया है। जो मनुष्य परम शान्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है उसे दूसरे प्राणियों के मांस का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। मांस न खाने से सब प्रकार का सुख मिलता है।

मनुष्य जिस प्रकार अपने पर दया चाहता है उसी प्रकार दूसरों पर भी कृपा करनी चाहिए। समस्त जीवों पर दया करने के समान संसार में परोपकार का कोई कार्य शेष नहीं रहता। ऐसे व्यक्ति मोक्ष के भागी होते हैं। प्राणदान के समान दूसरा कोई दान न हुआ है और न होगा। मृत्यु किसी भी प्राणी के लिए अभीष्ट नहीं है। क्योंकि मृत्यु काल में सभी प्राणी कांपते हैं। इस संसार सागर में समस्त प्राणी मृत्यु भय से बेचैन रहते हैं।

प्रकृति ने मनुष्य के लिए तरह-तरह के अच्छे-अच्छे फल, फूल, साग-भाजी, रसीली मिठाई, दूध, घी दिये हैं उनका परित्याग कर निर्दयी राक्षसों की तरह मांस खाने में रुचि लेते हैं। जिसका वध किया जाता है वह प्राणी कहता है- '**मांस भक्षते यस्मादभक्षयिष्ये तमष्याहम्**' आज मुझे वह खाता है तो मैं भी उसे खाऊँगा। इसे ही मांस का तात्पर्य समझें। यही मांस का मांसत्व है। इस जन्म में जिस जीव की हिंसा होती है वह दूसरे जन्म में पहले घातक को मारता है फिर मांस खाने वाला उसके हाथ से मारा जाता है। जो दूसरों की निन्दा करता है वह स्वयं भी दूसरों के क्रोध और दंश का पात्र बनता है। यह सत्य है- यदि मांस को अभक्ष्य समझ कर लोग उसे खाना छोड़ दें तो पशुओं की हत्या स्वतः ही बन्द हो जायेगी। हिंसा करने वालों की आयु क्षीण होती है इसलिए अपना हित चाहने वाले मनुष्यों को मांस का परित्याग कर देना चाहिए।

आयुर्वेद बताता है कि रोग की उत्पत्ति मन से होती है। विषयों के आस्वादन से उनके प्रति राग उत्पन्न होता है, जो चित्त को अपने वश में कर लेता है और यही रोगों का मूल कारण है। इसी प्रकार मांस का रस लेने के बाद वह मांस खाने की प्रशंसा कर औरों को भ्रष्ट करता है इसलिए पशुओं, पक्षियों और जलचरों मछली आदि का वध बन्द होना चाहिए। यह सत्य है कि अहिंसा से ही धर्म की उत्पत्ति हुई है। जिस प्रकार हाथी के पैर में समस्त जीवों के पंजे आ जाते हैं उसी प्रकार अहिंसा में सभी धर्मों का समावेश होता है।

महाभारत में महर्षि वेदव्यास कहते हैं- 'अहिंसा परमो धर्म, अहिंसा परम संयम, अहिंसा परम दान, अहिंसा परम तप, अहिंसा परम यज्ञ, अहिंसा परम फल, अहिंसा परम मित्र और अहिंसा परम सुख है।' इस बात को ध्यान में रखते हुए हिंसा का त्याग कर मांस भक्षण का परित्याग करें।

- सुखदेव व्यास
अनन्त सुन्दरम भवन, १८ जहाज गली
उज्जैन (मध्यप्रदेश), चलभाष- ०९०३९१८२४८९

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आर्यावर्त्त प्रदर्शनी बहुत सुन्दर व सुव्यवस्थित है। प्रदर्शनी का प्रचार-प्रसार अधिक नहीं होने से मैं उदयपुर का निवासी होने पर भी अनभिज्ञ रहा। गुलाबबाग में टहलते हुए एक पुराने से बोर्ड पर मेरी नजर पड़ी तो अन्दर देखने की जिज्ञासा लिए नवलखा महल में आया। ऐसी सुव्यवस्थित जानकारी वो भी जिज्ञासुओं के लिए सचमुच आनन्दित कर देने वाली है। जो वैदिक संस्कृति से अनभिज्ञ हैं उनकी जानकारी हेतु यह दीर्घा अहुत अच्छी है। इस युग में हम लोगों का दुर्भाग्य है कि हम हमारी प्राचीन संस्कृति व विरासत को बचा नहीं पा रहे हैं। उसके पीछे कारण है कि हम भौतिकवादिता को छोड़ आध्यात्मवाद की ओर अपनी नई पीढ़ी को मोड़ नहीं पा रहे हैं। लेकिन इस आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा को देखने के पश्चात् ऐसा लगता है कि आर्यसमाज एवं इस संस्था द्वारा जो प्रचार-प्रसार किया जा रहा है उससे हम राष्ट्र का पुनरुद्धार निश्चित रूप से कर सकते हैं। मैं नमन करता हूँ आर्य समाज को एवं इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को।

- दुर्गेश देव, चलभाष- ७७४२१६५६४५

ईसाई मिशनरियों का मायाजाल

गैर ईसाईयों को ईसाई बनाने के लिए किस तरह के षड्यंत्रों का प्रयोग किया जाता है वह विचारणीय है। क्या आपने कभी सुना है कि कुछ मुस्लिम आज तक ईसाई बने हैं? आखिर हिन्दू ही इतना आसान क्यों है? कुछ समय पहले झारखण्ड सरकार ने No Conversion (धर्मान्तरण रोकने का कानून) बनाया तो समस्त ईसाइयों ने इसका जबर्दस्त विरोध किया।

जानिए इनके कुछ छल कपट जो पूर्व में अपनाए गए थे या आज अपनाए जा रहे हैं-

१. उत्तरी सेंटिनल द्वीप के मूल निवासियों ने २७ वर्षीय अमेरिकी नागरिक जान एलन चाउ को मार दिया था। जाँच में स्पष्ट हुआ कि चाउ ने हर एक भारतीय नियम, कानून

एल. एन. चाउ अपने माँ के साथ

और अधिनियम की अवहेलना की। ऐसा नहीं है कि चाउ पहली बार अंडमान निकोबार आया था। वह सितंबर २०१६ से लेकर अपनी मौत से पहले तीन बार पोर्ट ब्लेयर आ चुका था। आखिर चाउ कौन था? किस मानसिकता और किस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने अपनी जान दांव पर लगा दी? जहाँ एक तरफ भारत में चाउ के वास्तविक उद्देश्य पर पर्दा डालने का संगठित प्रयास हो रहा है वहीं 'इंटरनेशनल क्रिश्चियन कन्सर्न' नामक ईसाई संगठन और अधिकांश विदेशी मीडिया ने सच्चाई उजागर करते हुए चाउ का वर्णन ईसाई मिशनरी-प्रचारक के रूप में किया है। दर्दनाक मौत से पहले चाउ ने अपने माता-पिता के नाम छोड़े पत्र में लिखा, 'आप लोगों को लगता होगा कि मैं सनक गया हूँ, किन्तु उन्हें (सेंटिनल द्वीपवासी) जीसस के बारे में बताना आवश्यक है। उन लोगों से मेरा मिलना व्यर्थ नहीं है। मैं चाहता हूँ कि वे लोग भी अपनी भाषा में प्रभु की आराधना करें। यदि मेरी मौत हो जाए तो आप इन लोगों या प्रभु से नाराज मत होना। मैं आप सभी से प्यार करता हूँ और मेरी प्रार्थना है कि आप दुनिया में ईसा मसीह से अधिक किसी और से प्यार न करें।' १३ पन्नों की यह चिट्ठी चाउ ने अपनी मदद करने वाले मछुआरों को सौंपी थी।

२. जिसे आज हम झारखण्ड कहते हैं वह उस समय बिहार का हिस्सा था। आदिवासियों में एक अफवाह फैलाई गई कि आदिवासी हिन्दू नहीं ईसाई हैं। उस समय कार्तिक उरांव, जो वनवासियों के समुदाय से थे एवं कांग्रेस में इन्दिरा गाँधी के समकक्ष नेता थे, ने इसका बहुत ही कड़ा और कारगर विरोध किया। उन्होंने कहा कि पहले सरकार इस बात को निश्चित करे कि बाहर से कौन आया था? यदि हम यहाँ के मूलवासी हैं तो फिर हम ईसाई कैसे हुए क्योंकि ईसाई पन्थ तो भारत से नहीं निकला। और यदि हम बाहर से आये ईसाईयत को लेकर, तो फिर आर्य यहाँ के मूलवासी हुए। और यदि हम ही बाहर से आये तो फिर ईसा के जन्म से हजारों वर्ष पूर्व हमारे समुदाय में निषादराज गुह, शबरी, कणप्पा आदि कैसे हुए? उन्होंने यह कहा कि हम सदैव हिन्दू थे और रहेंगे।

उसके बाद कार्तिक उरांव ने बिना किसी पूर्व सूचना एवं तैयारी के भारत के भिन्न-भिन्न कोनों से वनवासियों के

मनुष्य विचारशील प्राणी है। विचारोपरान्त यदि उसे ठीक लगे तो उसे कोई भी मत ग्रहण करने की स्वतंत्रता होनी ही चाहिए परन्तु साथ ही साथ लोभ-लालच, बहला-फुसलाकर अथवा दबाव आदि से कराए जाने वाले मतान्तर को रोकने हेतु सख्त कानून होना चाहिए। -संपादक

पाहन, वृद्ध तथा टाना भगतों को बुलाया और यह कहा कि आप अपने जन्मोत्सव, विवाह आदि में जो लोकगीत गाते हैं उन्हें हमें बताइए। और फिर वहाँ सैकड़ों गीत गाये गए और सबों में यही वर्णन मिला कि यशोदा जी बालकृष्ण को पालना झुला रही हैं, सीता माता राम जी को पुष्पवाटिका में निहार रही हैं, कौशल्या जी राम जी को दूध पिला रही हैं, कृष्ण जी रुक्मिणी से परिहास कर रहे हैं, आदि आदि। साथ ही यह भी कहा कि हम एकादशी को अन्न नहीं खाते, जगन्नाथ भगवान की रथयात्रा, विजयादशमी, रामनवमी, रक्षाबन्धन, देवोत्थान पर्व, होली, दीपावली आदि बड़े धूमधाम से मनाते हैं।

फिर कार्तिक उरांव ने कहा कि यहाँ यदि एक भी व्यक्ति यह गीत गा दे कि मरियम ईसा को पालना झुला रही हैं और यह गीत हमारे परम्परा में प्राचीन काल से है तो मैं भी ईसाई बन जाऊँगा।

स्व. कार्तिक उरांव ने लोकसभा में ३४८ सांसदों के हस्ताक्षर के साथ धर्मांतरण बिल पेश किया था, पर अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के कारण यह अनिश्चित काल के लिए स्थगित रह गया।

उन्होंने १९६६ में अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद् की स्थापना की। अपने लम्बे अनुभव के आधार पर 'बीस वर्षों की काली रात' पुस्तक लिखी। इस पुस्तक का सारांश ही धर्मांतरण निषेध और धर्मांतरित आदिवासियों को दोहरे लाभ से वंचित करना है। (सम्पादक)

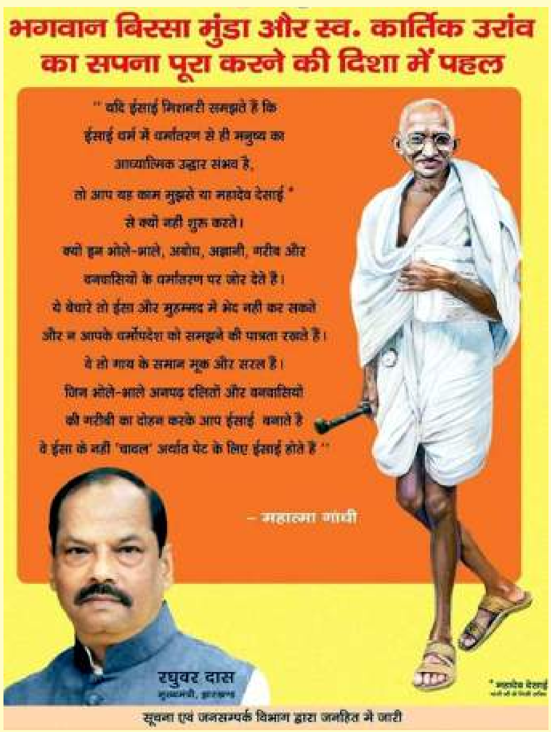

उन्होंने यह भी कहा कि मैं वनवासियों के उरांव समुदाय से हूँ। हनुमानजी हमारे आदिगुरु हैं और उन्होंने हमें राम नाम की दीक्षा दी थी। ओ राम, ओ राम कहते-कहते हम उरांव के नाम से जाने गए। हम हिन्दू ही पैदा हुए और हिन्दू ही मरेंगे।

३. जेमो केन्याटा केन्या की जनता के बीच राष्ट्रपिता का दर्जा रखते हैं। उन्होंने कहा था- 'जब केन्या में ईसाई मिशनरियाँ आईं उस समय हमारी धरती हमारे पास थी और उनकी बाइबिल उनके पास। उन्होंने हम से कहा 'आँख बन्द कर प्रार्थना करो।' जब हमारी आँखें खुलीं तो हमने देखा कि उनकी बाइबिल हमारे पास थी और हमारी धरती उनके पास।

४. छत्तीसगढ़- एक मिशनरी के हाथ में २ मूर्तियाँ हैं। एक भगवान कृष्ण की और दूसरी यीशु की। ईसाई मिशनरी (प्रचारक) गाँव वालों को कहता है कि देखो जिसका भगवान सच्चा होगा वह पानी में तैर जाएगा। यीशू की मूर्ति तैरती है (क्योंकि वह लकड़ी की बनी थी) और श्रीकृष्ण की मूर्ति पानी में डूब जाती है (क्योंकि वह मिट्टी की बनी थी) ये छल कई गाँवों में अजमाया गया। एक गाँव में एक युवक ने कहा कि हमारे यहाँ तो अग्नि परीक्षा होती है तो मिशनरी बहाना बनाकर निकल जाता है।

५. इसाई चमत्कारिक प्रेरक- प्रचारक-पाल दिनाकरण- प्रार्थना के पैक बेचते हैं। पाल दिनाकरण प्रार्थना की ताकत से भक्तों को शारीरिक तकलीफों व दूसरी समस्याओं से छुटकारा दिलाने का दावा करते हैं। पाल बाबा अपने भक्तों को इन्श्योरेंस या प्रीपेड कार्ड की तरह प्रेयर पैकेज बेचते हैं। यानी, वे जिसके लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं, उससे मोटी रकम भी वसूलते हैं। मसलन ३००० रुपये में आप अपने बच्चों व परिवार के लिए प्रार्थना करवा सकते हैं। पाल दिनाकरन जो कि एक ईसाई प्रेरक हैं उनकी संम्पत्ति ५००० करोड़ से ज्यादा है, बिशप के. पी. योहन्नान की संपत्ति ७००० करोड़ है, ब्रदर थान्कू (कोट्टायम , केरल) की संपत्ति ६००० हजार करोड़ से अधिक है।

६. अभी कुछ साल पहले मदर टेरेसा का बीटिफिकेशन हुआ था अर्थात् मदर टेरेसा को सन्त घोषित किया गया। जिसके लिए राईगंज के पास की रहने वाली किन्हीं मोनिका बेसरा से जुड़े 'चमत्कार' का विवरण पेश किया गया था। गौरतलब है कि 'चमत्कार' की घटना की प्रामाणिकता को लेकर सिस्टर्स ऑफ चैरिटी के लोगों ने लम्बा चौड़ा ४५० पेज का विवरण वैटिकन को भेजा था। यह प्रचारित किया गया था कि मोनिका के ट्यूमर पर जैसे ही मदर टेरेसा के लॉकेट का स्पर्श हुआ, वह फोड़ा छूमन्तर हुआ। दूसरी तरफ खुद

मोनिका बेसरा के पति सैकिया मूर्म ने 'चमत्कार' की घटना पर यकीन नहीं किया था और मीडियाकर्मियों को बताया था कि किस तरह मोनिका का लम्बा इलाज चला था। दूसरे राईगंज के सिविल अस्पताल के डाक्टरों ने भी बताया था कि किस तरह मोनिका बेसरा का लम्बा इलाज उन्होंने उसके ट्यूमर ठीक होने के लिए किया।

भारत की सनातनी परम्परा सदियों से भय, लालच और धोखे का शिकार रही है। देश में अधिकांश चर्चों और ईसाई मिशनरियों की विकृत 'सेवा' उसी गुप्त एजेंडे का हिस्सा है जिसकी नींव १५वीं शताब्दी में गोवा में पुर्तगालियों के आगमन और १६४७ में ब्रितानी चौपलेन ने मद्रास पहुँचने पर रखी थीं। १८१३ में चर्च के दवाब में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया चार्टर में विवादित धारा जोड़ी, जिसके बाद ब्रिटिश पादरियों और ईसाई मिशनरियों का भारत में ईसाइयत के प्रचार-प्रसार का मार्ग साफ हो गया। तभी से भारतीय समाज के भीतर मतान्तरण का खेल जारी है। आज भी स्वतंत्र भारत के कई क्षेत्रों में खुलेआम कथित आत्मा का कुत्सित व्यापार-विदेशी वित्तपोषित स्वयंसेवी संगठनों के समर्थन और वामपंथियों सहित स्वयंभू सेक्युलरिस्टों की शह पर धड़ल्ले से चल रहा है।

स्वतंत्रता से पूर्व नगालैंड और मिजोरम दोनों आदिवासी बहुल क्षेत्र थे। १९४१ में नागालैंड की कुल आबादी में जहाँ गिनती के केवल नौ ईसाई (लगभग शून्य प्रतिशत) थे और मिजोरम में ईसाइयों की संख्या केवल .०३ प्रतिशत थी, वह यकायक १९५१ में बढ़कर क्रमशः ४६ और ९० प्रतिशत हो गई। २०११ की जनगणना के अनुसार, दोनों प्रान्तों की कुल जनसंख्या में ईसाई क्रमशः ८८ और ८७ प्रतिशत हैं। मेघालय की भी यही स्थिति है। अब इतनी वृहद् मात्रा में मतान्तरण के लिए क्या-क्या हथकण्डे अपनाए गए होंगे, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। क्या यह सत्य नहीं कि इसी जन सांख्यिकीय स्थिति के कारण इन इलाकों में चर्च का अत्यधिक प्रभाव है और वहाँ का एक वर्ग भारत की मुख्यधारा से कटा हुआ है?

ईसाई दयालुता केवल तभी तक है जब तक कोई व्यक्ति ईसाई नहीं बनता। यदि इन्हें लोगों की भूख, गरीबी और बीमारी की ही चिन्ता होती तो अफ्रीका महाद्वीप के उन देशों में जाते जहाँ ९५% जनसंख्या ईसाई है। आज जरूरत है कि प्रत्येक भारतीय महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पढ़े और विधर्मियों के छल कपट को समझे। यदि हम आज नहीं जागे तो कल तक बहुत देर हो जाएगी।

- संजय कुमार

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

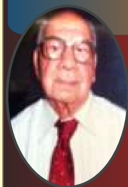

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

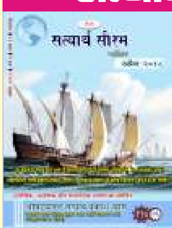

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ब्राह्मसमाज की अवैदिक व अव्यवहारिक मान्यतायें और आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना सन् १८७५ में मुम्बई में की थी। उन्होंने सन् १८६३ से वेद व वैदिक मान्यताओं का प्रचार आरम्भ कर दिया था। वह वेद विरुद्ध मान्यताओं व सिद्धान्तों का खण्डन करते थे। उनका उद्देश्य असत्य को छोड़ना व छुड़ाना तथा सत्य को स्वीकार करना व कराना था। इसके लिये वह किसी भी मत के आचार्य से वार्तालाप व शास्त्रार्थ करने के लिये उद्यत रहते थे। उन्होंने अपने किसी विचार व मान्यता को कभी छुपाया नहीं और अपनी सभी मान्यताओं व सिद्धान्तों को सत्य की कसौटी पर कस कर उसे सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया। सभी मतों के विद्वानों को उन्होंने वेद व आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर आपत्ति व खण्डन का अवसर दिया। उनकी सभी मान्यतायें अकाट्य थीं। यही कारण है कि किसी मत का कोई विद्वान् उनके सामने शंका समाधान व शास्त्रार्थ के लिए उद्यत नहीं होता था। ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रमुख मान्यताओं के दो लघु ग्रन्थ 'स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश' और 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' नाम से प्रकाशित किये। प्रथम लघु ग्रन्थ में उनकी लगभग ५१ मान्यतायें व सिद्धान्त दिये हैं जो आज भी सत्य की कसौटी पर खरे हैं। किसी मत का कोई आचार्य उनका खण्डन व आलोचना नहीं कर सका।

जो लोग वेदानुयायी हैं और ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलते हैं, वे धन्य हैं। इन ऋषि-मान्यताओं को जानकर उनका आचरण करने से निश्चय ही अध्येता को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में सफलता प्राप्त होती है। हमारे अनुमान से यह लाभ अन्य मतों के अनुयायियों को मिलना संदिग्ध है।

ऋषि दयानन्द द्वारा सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना से ४७ वर्ष पूर्व बंगाल के धार्मिक एवं सामाजिक नेता राजा राममोहन राय ने सन् १८२८ में ब्राह्मसमाज की स्थापना की थी। बाद में श्री देवेन्द्र नाथ ठाकुर तथा श्री केशव चन्द्र सेन आदि नेता भी इस आन्दोलन से जुड़े। महर्षि दयानन्द की बाद के दो नेताओं से भेंट व सम्पर्क भी हुआ था। महर्षि दयानन्द के काल में इस समाज का बंगाल व देश के कुछ भागों, मुख्यतः नगरों में अच्छा प्रभाव था। महर्षि दयानन्द ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इस ब्राह्मसमाज की समालोचना की है। वह कहते हैं कि ब्राह्मसमाज में कुछ-कुछ बातें अच्छी और बहुत-सी बुरी हैं। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए वह लिखते हैं कि इस समाज के सभी नियम सर्वांश में अच्छे नहीं हैं क्योंकि वेद-विद्याहीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है? जो कुछ ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाये और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्तिपूजा को हटाया तथा अन्य जाल ग्रन्थों (पुराणादि) के फन्द से भी कुछ बचाये इत्यादि बातें ब्राह्मसमाज व प्रार्थनासमाज की अच्छी हैं। इन अच्छाईयों के बाद ऋषि दयानन्द ने इस संस्था की कमियों व त्रुटियों को प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आचरण बहुत से ले लिये हैं। खानपान विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं।

ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि ब्राह्मसमाज के लोग अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई व सम्मान करना तो दूर उस के स्थान में पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत् ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ। आर्यावर्त्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इन की उन्नति कभी नहीं हुई।

ऋषि दयानन्द आगे लिखते हैं कि वेदादि ग्रन्थों की प्रतिष्ठा तो दूर रही परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते।

ब्राह्मसमाज के उद्देश्य के पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा', 'मुहम्मद', 'नानक' और 'चैतन्य' के नाम लिखे हैं। किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नहीं लिखा। इससे जाना जाता है कि इन लोगों ने जिनका नाम लिखा है उन्हीं के मत के अनुसार ही मतवाले हैं। भला! जब आर्य्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं, अपने माता, पिता, पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्मसमाजी और प्रार्थना समाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृतविद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़के पंडिताभिमानी होकर झटिति एकमत चलाने में प्रवृत्त होना, मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है? इन पंक्तियों में ऋषि की स्वदेश भक्ति के दर्शन होते हैं। उनका मानना है कि जो मनुष्य जिस देश में उत्पन्न हुआ, उस देश के पूर्वजों, महापुरुषों व विद्वान् ऋषियों की प्रशंसा न कर उनके स्थान पर विदेशियों की प्रशंसा करना उचित नहीं है। यदि ऐसा करेंगे तो इस देश में ईश्वर व ऋषियों की देन ज्ञान-विज्ञान पर आधारित विश्व का एकमात्र वैदिक धर्म व संस्कृति विलुप्त व समाप्त हो जायेगी। ऐसा करना किसी भी देशवासी के लिए उचित नहीं है।

स्वामी दयानन्द जी ने ब्राह्मसमाजियों पर एक आरोप यह भी लगाया है कि इन्होंने अंगरेज, यवन, अंत्यजादि से भी खाने-पीने का भेद नहीं रक्खा। इन्होंने यही समझा होगा कि खाने-पीने और जाति भेद तोड़ने से हम और हमारा देश सुधर जायगा। परन्तु ऐसी बातों से सुधार तो कहाँ है, उलटा बिगाड़ होता है। यह बता दें कि स्वामी दयानन्द जी मनुष्यों की एक ही जाति मानते थे। ब्राह्मसमाजी लोग जगत् की उत्पत्ति बिना प्रकृति नामी उपादान कारण के मानते हैं। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि यह लोग जीव को भी उत्पत्ति धर्मा मानते हैं। इनकी यह मान्यता ईसाई व मुसलमानों की मान्यताओं के अनुरूप है। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति ईश्वर के द्वारा प्रकृति नामी अनादि व अविनाशी उपादान कारण से होती है। इसी प्रकार जीव भी अनादि व अविनाशी है और इसी के कर्मों के फल भोग के लिये ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है।

मनुष्यों के पापों को क्षमा करने की मान्यता का उल्लेख कर ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि- एक यह भी उनका दोष है कि जो पश्चाताप और प्रार्थना से पापों की निवृत्ति मानते हैं। इसी बात से जगत् में बहुत से पाप बढ़ गये हैं। क्योंकि पुराणी लोग तीर्थादि यात्रा से, जैनी लोग भी नवकार मन्त्र

जप और तीर्थादि से, ईसाई लोग ईसा के विश्वास से, मुसलमान लोग 'तोबाः' करने से पाप का छूट जाना बिना पाप कर्मों के भोग के मानते हैं। इस से पापकर्त्ता में पापों से भय न होकर पाप में प्रवृत्ति बहुत हो गई है। इस बात में ब्राह्म और प्रार्थनासमाजी भी पुराणी आदि के समान हैं। यह सब लोग यदि वेदों को सुनते तो विना भोग के पाप-पुण्य की निवृत्ति न होने से पापों से डरते और धर्म में सदा प्रवृत्त रहते। जो पापों को विना भोगे उनकी निवृत्ति मानें तो ईश्वर अन्यायकारी होता है। ऐसा नहीं है, ईश्वर सभी मनुष्यों के शुभ व अशुभ कर्मों का याथातथ्य अर्थात् पूरा-पूरा, न कम न अधिक फल अवश्य देता है जिससे जीव पापों में प्रवृत्त न हो अथवा पाप कर्म करना छोड़ दें।

ऋषि दयानन्द आगे कहते हैं कि ब्राह्मसमाजी जीव की अनन्त उन्नति मानते हैं सो कभी नहीं हो सकती क्योंकि ससीम जीव के गुण, कर्म, स्वभाव का फल भी ससीम होता है। पुनर्जन्म को न मानने की ब्राह्मसमाजियों की मान्यताओं का उल्लेख कर ऋषि कहते हैं कि आप लोगों ने पूर्व और पुनर्जन्म नहीं माना है, वह ईसाई मुसलमानों से लिया होगा। इस पूर्व व पुनर्जन्म के विषय को समझने के लिये ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के पुनर्जन्म प्रकरण को पढ़ने की सलाह दी है। वह लिखते हैं कि इतना समझो कि जीव शाश्वत अर्थात् नित्य है और उस के कर्म भी प्रवाहरूप से नित्य हैं। कर्म और कर्मवान् का नित्य सम्बन्ध होता है। वह पूछते हैं कि क्या वह जीव जन्म से पूर्व कहीं निकम्मा बैठा रहा था? वा मृत्यु के बाद बैठा रहेगा? और परमेश्वर भी तुम्हारे कहने से निकम्मा होता है। पूर्व व पुनर्जन्म न मानने से कृतहानि आदि अनेक दोष ईश्वर में आते हैं। जन्म न हो तो पाप-पुण्य के फल भोग की हानि हो जाये क्योंकि जिस प्रकार दूसरे मनुष्य व प्राणियों को सुख, दुःख, हानि, लाभ पहुँचाया होता है वैसा उस का फल विना शरीर धारण किये नहीं होता। दूसरा पूर्वजन्म के पाप-पुण्यों के विना इस जन्म में सुख, दुःख की प्राप्ति क्योंकर होवे? जो पूर्वजन्म के पाप-पुण्यानुसार जन्म न होवे तो परमेश्वर

अन्यायकारी कहलायेगा और विना भोग किये कर्म का फल नाश को प्राप्त हो जावे, इसलिए यह पुनर्जन्म न मानने की बात ब्राह्मसमाजियों की अच्छी नहीं है। स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि ब्राह्मसमाजियों द्वारा अग्निहोत्रादि परोपकारक कर्मों को कर्तव्य न समझना अच्छा नहीं है। वह यह भी कहते हैं कि ऋषि महर्षियों के किये उपकारों को न मानकर ईसा आदि के पीछे झुक पड़ना अच्छा नहीं। उनके अनुसार विना कारण-विद्या वेदों के अन्य कार्य-विद्याओं की प्रवृत्ति मानना सर्वथा असम्भव है। इसका तात्पर्य है कि वेद ही सभी विद्याओं का कारण है। यदि वेद न होते तो संसार में कोई कार्य विद्या न होती। ऋषि यह भी लिखते हैं कि जो विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना है, यह भी व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहिरते हो और 'तमगों' की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था?

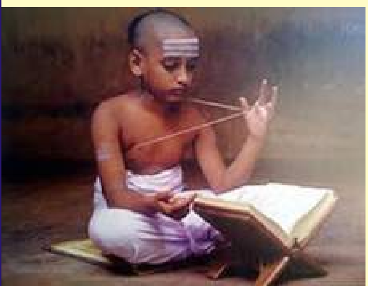

स्वामी जी ने कहा है कि ब्रह्मा से लेकर पीछे-पीछे आर्यावर्त्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं। उन की प्रशंसा न करके यूरोपियन लोगों ही की स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के विना क्या कहा जाए?

ब्राह्मसमाज के प्रकरण में ऋषि दयानन्द ने महत्वपूर्ण बात यह भी लिखी है 'इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उस के उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।'

वर्तमान में ब्राह्मसमाज का संगठन व विचारधारा अव्यवहारिक प्रायः हो चुकी है। देशभर और बंगाल में भी इसका प्रभाव कम व समाप्त प्रायः दीखता है। दूसरी ओर आर्यसमाज की सत्य व ज्ञान-विज्ञान पर आधारित वेदसम्मत स्वदेशी मान्यताओं के कारण ब्राह्मसमाज के ४७ वर्ष बाद स्थापित आर्यसमाज आज भी विश्व के अनेक देशों में कार्यरत है। देश में भी इसका प्रभाव बढ़ रहा है। आर्यसमाज ने ही देश में स्वदेशी की भावना, स्वतन्त्रता आन्दोलन व शिक्षा जगत् में क्रान्ति की। अनेक अन्धविश्वासों व कुरीतियों का उन्मूलन किया। जन्मना जातिवाद सहित बाल विवाह, बेमेल विवाह तथा एक समुदाय-जाति में विवाह का विरोध आर्यसमाज ने ही किया था। कम आयु की विधवाओं के पुनर्विवाह को आपद्धर्म के रूप में मान्यता दी। आज देश व समाज से अन्धविश्वासों, मिथ्या-परम्पराओं व सामाजिक भेदभाव का प्रभाव पूर्णरूपेण समाप्त भले ही न हुआ हो, परन्तु यह कम अवश्य हुआ है और अब पूर्णतया उन्मूलन के कगार पर है। ऋषि दयानन्द ने देश और समाज को बहुत कुछ दिया है। आर्यसमाज के सभी सिद्धान्त सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक एवं सर्वजनहितकारी, प्राणीमात्र के लिये उपादेय एवं व्यवहारिक हैं। सभी को आर्यसमाज की विचारधारा व वैदिक सिद्धान्तों का पालन करना चाहिये। इसी में सबका लाभ है।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला- २, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़

जब हम पौराणिक धर्मभीरु भाईयों का देखते हैं कि वे अपने आराध्य देव चाहे वह राम, कृष्ण हों, महादेव हों, गणेश हों, हनुमान जी हों या चाहे माता दुर्गा हों या काली हों सभी की पूजा या उपासना भाव से नहीं करते बल्कि भय से करते हैं। वे डरते रहते हैं कि अनिष्ट न कर देवें, जबकि वह पत्थर की मूर्ति जिसमें प्राण ही नहीं है भला क्या अनिष्ट करेगी। फिर भी वह डरता रहता है। उनके मन में सदैव यह भय बना रहता है कि यदि मैंने राम की पूजा अधिक कर ली तो कहीं दूसरे देवता कृष्ण, शिव, गणेश, विष्णु तो नाराज न हो जावेंगे, अतः भय से वह बहुत सम्भल-सम्भल कर सभी देवी देवताओं की पूजा बराबर-बराबर करते हैं। यदि भूल से किसी देवता की आरती कुछ समय अधिक कर दी तो औरों की भी उतने ही अधिक समय तक करेगा ताकि किसी देवता को भी कोई शिकायत न रहे। वह सदैव देवी-देवताओं की शिकायतों से ही डरता रहता है। भाव से पूजा करने का उसे ध्यान नहीं रहता है। वह गण्डे, डोरी, ताबीज भी बाँधता रहता है ताकि देवता लोग खुश रहें। वह न तो सही ईश्वर को जान पाता है और न ही सही पूजा व उपासना को जान पाता है। ईश्वर की भक्ति भाव से होती है न कि भय से। भक्त के भाव यदि अच्छे हैं तो पद्धति चाहे कैसी भी हो उसको उसी भक्ति, पूजा या उपासना में आनन्द मिलेगा, ईश्वर भावों को देखता है, पद्धति को नहीं।

वैदिक धर्म में ईश्वर की भक्ति या उपासना भाव से की जाती है। वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर जो पूरी सृष्टि को रचने वाला, पालन करने वाला व संहार करने वाला है, साथ ही जीवों को उनके कर्मानुसार फल देने वाला है, उस एक सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, सर्वज्ञ है, उसी की उपासना भाव से करना सिखाता है। महाभारत तक केवल एक ही धर्म, वैदिक धर्म ही चलता आ रहा था परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध में भारत के अधिकतर विद्वान् योद्धा, आचार्य व धर्मोपदेशक समाप्त हो जाने से स्वार्थी, अनपढ़ व अधकचरे विद्वानों व ब्राह्मणों के ऊपर धर्म चलाने का भार आ गया। उन स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ईश्वर के जो गुण और कार्य हैं, उनके आधार पर अनेक देवी देवता बना दिए। जैसे ईश्वर, सृष्टि की उत्पत्ति करता है तो उसका नाम ब्रह्मा रख दिया। ईश्वर सृष्टि का पालन करता है तो उसका नाम विष्णु रख दिया और ईश्वर सृष्टि की अवधि चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष पूरे होने पर सृष्टि का विनाश या संहार करता है तो उसका नाम शिव रख दिया। इसी प्रकार विद्या की देवी का सरस्वती तथा धन की देवी का नाम लक्ष्मी रख दिया परन्तु ये सब नाम उस परमपिता परमात्मा के ही हैं। उसी के कार्यों व गुणों के अलग-अलग नाम रख दिए हैं। इसी से लोग सच्चे ईश्वर को भूल गए और अनेक देवी-देवताओं को मनुष्य की भाँति खुश करने के लिए तरह-तरह के तरीकों के प्रलोभन व रिश्वत भी देने लग गए। जैसे हे! काली माता, मेरा यह काम पूरा कर दोगी तो तुमको एक बकरा भेंट चढ़ा दूँगा। ब्राह्मणों ने भी मनुष्य की इस कमजोरी का लाभ उठाया। उन्होंने भी मूर्तिपूजा, अवतारवाद, ग्रहचक्र, भाग्य-दुर्भाग्य, शगुन, अपशगुन, वरदान, श्राप, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, आदि अनेक प्रकार के अन्धविश्वास व पाखण्ड फैला कर और अनेक प्रकार के मत-मतान्तर चलाकर लोगों को भ्रमित करके काफी ठगा और लोगों को उनके सच्चे पथ से भटका दिया, इससे मानव जाति का बड़ा ह्रास हुआ है। ईश्वर के नाम पर अनेक देवी देवताओं को मानना मनुष्य की भूल व गलती कहलायी जायेगी।

ईश्वर केवल एक ही है। वही उत्पत्तिकर्त्ता, वही पालनकर्त्ता वही संहारकर्त्ता, साथ ही वही मनुष्यों के अच्छे बुरे कार्यों का

फल, अच्छे कर्म का फल सुख के रूप में और बुरे कर्म का फल दुःख के रूप में देने वाला है। उसी की उपासना करनी चाहिए।

जो व्यक्ति अपने जीवनभर निष्काम कर्म करता है यानि जो कुछ भी कार्य करता है उसके पीछे उसका उद्देश्य परोपकार करना है। अपने स्वार्थ के लिए वह कोई काम नहीं करता। वह भोजन करता है तो भी यही सोचकर करता है कि भोजन करके मैं जीवित रह सकूँगा और देश व मानवता का काम करता रह सकूँगा। ऐसे व्यक्ति को ही मोक्ष प्राप्त होता है। महाभारत से लेकर अभी तक इन पाँच हजार वर्षों में केवल दो ही महापुरुष ऐसे हुए हैं जिनका पूरा जीवन परोपकार करने में ही बीता है। वे हैं पहले भगवान श्रीकृष्ण दूसरे हैं

महर्षि देव दयानन्द। जिनको महर्षि की भाषा में आप्त पुरुष कहते हैं। ऐसे व्यक्ति को मोक्ष मिलना निश्चित है। इसके अलावा जो मनुष्य अपने जीवन में पचास प्रतिशत या इससे अधिक अच्छे कर्म करता है तो वह अच्छे कर्मों के अनुसार मनुष्य योनि में अच्छे या हल्के परिवार में जन्म लेता है। यानि पचास प्रतिशत वाला किसी अनपढ़ गरीब परिवार में जन्म लेगा। जो साठ प्रतिशत से अधिक अच्छे कार्य करता है उसका और अच्छे परिवार में इसी प्रकार सत्तर प्रतिशत से अधिक अच्छे कार्य करने वाले का जन्म किसी अच्छे साहूकार परिवार में और नब्बे प्रतिशत पिचयानवें प्रतिशत अच्छे काम करने वाले का जन्म किसी राजा या प्रधानमंत्री के घर में जन्म होगा है जिसमें उसको पूरी सुविधा होगी। इसी प्रकार जो व्यक्ति पचास प्रतिशत से कम अच्छे काम करता है उसको पशु योनि में, जो और अधिक कम अच्छे काम करता है और बुरे काम अधिक करता है उसको कर्मानुसार और नीचे की योनि पक्षी, कीट पतंग और गन्दी नाली के कीड़ों की योनि मिलती है और जो मनुष्य अपने जीवनभर परोपकार के कार्य करेगा प्रातः व सायं ईश्वर की नित्य उपासना करेगा और अष्टांग योग करके समाधि तक पहुँच जायेगा, उसको

निश्चित ही मोक्ष प्राप्त होगा। वैसे तो कर्मों के फल का पूरा ज्ञान तो केवल ईश्वर को ही है। मनुष्य तो केवल कल्पना ही कर सकता है। कल्पना के आधार पर सबको ऐसा ही मानना उचित है।

ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं उनका प्रकाश क्रमशः किया। इन वेदों में मनुष्य के जीवन में काम आने वाले साधारण ज्ञान से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक का ज्ञान ईश्वर ने दिया है। इसलिए मनुष्य को चाहिए वह इन चारों वेदों को पढ़े और उनके अनुसार चल कर अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनावे साथ ही दूसरों को भी वेदों को पढ़ने की प्रेरणा देकर दूसरों के जीवन को सुखी बनावे जिससे वह स्वयं और दूसरे भी मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बन सकें। इसी में मानव की मानवता है। यही बात वैदिक धर्म सिखाता है।

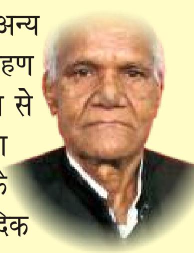

इसलिए सब मनुष्यों को चाहिए कि अन्य मत-मतान्तरों को छोड़कर वैदिक धर्म को ग्रहण करके अपने जीवन में परोपकार करते हुए भाव से ईश्वर की उपासना करते हुए अष्टांग योग द्वारा समाधि तक पहुँच कर मृत्यु के बाद मोक्ष पाने के अधिकारी बनें। यह निश्चित जानें कि केवल वैदिक धर्म ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सिखलाता है।

– खुशहाल चन्द्र आर्य
१८०- महात्मा गाँधी रोड़ (दो तल्ला), कोलकाता- ७०००००७
चलभाष- ०९८३०१३५७९४

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नज़दीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

गाजियाबाद से गाजीपुर बदलाव की लिस्ट लम्बी है

बात उस समय की है जब दिल्ली से सटा लोनी एक बड़ा नगर होता था। आज से करीब तीन सौ साल पहले। नगर तक पहुँचने के लिए जो द्वार बनाया गया था उसे कोटद्वार कहते थे। लोनी नगर मुस्लिम आक्रान्ताओं की मार सहता रहा और लहूलुहान होता रहा। उसी काल में कोटद्वार भी ध्वस्त हुआ और उस कोटद्वार पर जो शहर बसा उसे हम आज दिल्ली से सटे गाजियाबाद के नाम से जानते हैं।

गाजियाबाद ही वह शहर है जहाँ से उत्तर प्रदेश की शुरुआत होती है। उत्तर प्रदेश के वाणिज्यिक और औद्योगिक उत्पादन का महत्वपूर्ण केन्द्र। यहाँ से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर तक आपको हर जगह इस्लामिक आक्रमण और विध्वंस के निशान नामों के रूप में हर तरफ मिल जाएँगे। मसलन, उत्तर प्रदेश का कुशभवनपुर कब सुल्तानपुर हो गया, हमें नहीं मालूम। आज हमारे लिए वह सिर्फ सुल्तानपुर है। इसी तरह जिलों के स्तर पर प्रदेश में कुल १३ जिले ऐसे हैं जिनका नाम या तो बदल दिया गया या फिर उन्हें किसी न किसी आक्रान्ता ने अपनी निशानी के तौर पर रखा। देश में इकलौता उत्तर प्रदेश ऐसा राज्य है जहाँ सबसे ज्यादा पौराणिक और ऐतिहासिक नामों से छेड़छाड़ की गयी। इसके बाद बिहार का नम्बर आता है।

इन्हीं दो जगहों पर हिन्दुओं से जुड़े सबसे ज्यादा पौराणिक स्थान थे इसलिए इन्हीं दो जगहों पर सबसे ज्यादा बदलाव किये गये। इलाहाबाद के अलावा गाजियाबाद, अलीगढ़, आजमगढ़, फैजाबाद, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, फिरोजाबाद, जौनपुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, शाहजहाँपुर और सुल्तानपुर। इन सभी जिलों के नाम किसी न किसी मुस्लिम आक्रांता ने उन स्थानों की पौराणिक और वास्तविक पहचान छिपाने के लिए रखे या फिर बदल दिये। इसके अलावा उत्तर प्रदेश में रसूलपुर, मोहम्मदपुर या फिर मोहम्मदाबाद नामक गाँव या कस्बे तो हर जिले में दो चार मिल जाएँगे जो मुसलमान शासकों ने अपने पैगम्बर की याद में रखे थे।

उन्होंने ये सब अनायास तो नहीं किया होगा। इसके पीछे उनकी मंशा क्या रही होगी इसे आसानी से समझा जा सकता है। लेकिन हमारे सामने सवाल ये है कि क्या इन नामों को इसलिए बदल देना चाहिए क्योंकि मुगलों ने रखे थे या फिर इसलिए क्योंकि ये इस्लामिक पहचान रखते हैं? यह जटिल प्रश्न है। इसे कुछ इस तरह से पेश किया जाएगा कि मानों इसे हटाने का मतलब इस्लामिक पहचान मिटाने का प्रयास है। कुछ हद तक ही ये बात सही है। लेकिन असल सवाल तो ये है कि भारत में मुसलमान की इस्लामिक पहचान क्या है? क्या अरबी नामों को जस का तस रखकर स्थानीय पहचान को मिटा देना इस्लामिक पहचान है या फिर स्थानीय नाम ही मुसलमान की भी इस्लामिक पहचान है?

जहाँ तक नाम का सम्बन्ध है तो उसका सम्बन्ध हमेशा स्थानीय पहचान से ही होता है। भारत में ही उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक नामों की ऐसी विविधता भरी विशिष्टता है कि सिर्फ नाम से ही हमें उस स्थान के बारे में पता चल जाता है कि हम देश के किस

हिस्से के बारे में बात कर रहे हैं। कोई हमारे सामने थिंपू कहेगा तो हमारे मन में दक्षिण या पश्चिम का नक्शा नहीं उभरेगा। हमें उत्तर पूर्व का आभास होगा। इसी तरह तिरुअनन्तपुरम् कहते ही हमारा मन दक्षिण पहुँच जाता है।

ऐसे में औरंगाबाद चाहे तो महाराष्ट्र में हो या फिर बिहार में, वह हमें उस स्थान की कोई विशिष्ट पहचान नहीं देता। नाम लेने के बाद हमें यह भी बताना पड़ता है कि यह किस राज्य में है। ऐसे नामकरण औपनिवेशिक गुलामी के प्रतीक तो हो सकते हैं लेकिन स्थानीय पहचान से जुड़े हुए कभी भी नहीं। शासकों या कई बार महापुरुषों के नाम पर भी नामकरण करने से स्थानीय पहचान नष्ट होती है। इसलिए इसे हिन्दू मुसलमान नाम के रूप में देखने की बजाय उस जगह के स्थानीय पहचान और पौराणिक महत्व से जोड़कर देखना चाहिए। मोहम्मद कोई इस्लामिक नाम नहीं है। मोहम्मद अरबी नाम है जो मुसलमानों के पैगम्बर का भी नाम था। आप सोचिए जब उन्होंने इस्लाम की शुरुआत ही चालीस साल की उम्र में की तो उनका अपना नाम मोहम्मद इस्लामिक नाम कैसे हो सकता है? यह नाम तो इस्लाम शुरु होने से पहले भी अरब में इस्तेमाल होता था। इसलिए भारत में जो इस तरह के नाम दिये गये हैं उनका इस्लाम से नहीं, बल्कि अरब संस्कृति से नाता जरूर है। ऐसे में सवाल उठता है कि सूदूर भारत के किसी जिले या गाँव का नाम अरबी संस्कृति के अनुसार क्यों होना चाहिए? इसकी तुक क्या है? यह एक बेतुकी बात है जिसे भारत में उर्दू फारसी के महान

शायर मोहम्मद इकबाल समझते थे इसलिए १९२९ में इसी इलाहाबाद शहर में जब उन्होंने मुस्लिम लीग के बैनर तले ब्रिटिश हुकूमत के सामने एक अलग 'इस्लामिक राज्य' का खाका पेश किया था तो उस समय यह भी कहा था कि वह इस्लामिक राज्य अरब की भद्दी नकल नहीं होगा बल्कि हिन्दुस्तानी इस्लाम होगा। पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों ने पाकिस्तान तो ले लिया लेकिन उस पाकिस्तान को उन्होंने सच्चे इस्लाम के नाम पर अरब की भद्दी नकल ही बना दिया। सवाल हमारे सामने है। क्या भारत में भी हिन्दुस्तानी इस्लाम की वही सूरत होना चाहिए जो पाकिस्तान में है? या फिर मुसलमानों को भी स्थानीय जड़ों में अपनी पहचान खोजनी चाहिए जैसे बाकी दूसरे लोग करते हैं।

साभार- विस्फोट.काम

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	टे १	■	२	त्य २	■	३	ना ३	३	■
■	४	४	द ४	■	५	र ५	५	५	र ५
६	६ वि	६	ध ६	■	■	७	क ७	७	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कंटकी वृक्ष के विना क्या उत्पन्न नहीं होते?
२. जब कल्पना का कर्त्ता नित्य है तो उसकी कल्पना कैसी होगी?
३. यदि जगत् की उत्पत्ति स्वभाव से हो तो उसका क्या नहीं होगा?
४. 'सूर्याचन्द्रमसौधाता' किस वेद का मन्त्र है?
५. नवीन वेदान्तियों के अनुसार अणिमादि ऐश्वर्य को प्राप्त कर जीव क्या बन जाता है?
६. सृष्टि विषय में वेदादि शास्त्रों में अविरोध है वा विरोध?
७. ईश्वर कल्पकल्पान्तर में सृष्टि विलक्षण-विलक्षण बनाता है अथवा एकसी?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १२/१८ का सही उत्तर

१. जगत्   २. तीन   ३. मट्टी   ४. परमात्मा
५. सार्थक   ६. निमित्त   ७. नवीन वेदान्ती

"विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०१९

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता, प्रख्यात साहित्यकार, वैदिक विद्वान् व उद्‌भट वक्ता श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, जयपुर के सुपुत्र, आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर के मंत्री व वैदिक शिक्षण संस्थाओं के संचालक प्रिय भाई चक्रकीर्ति जी के, दिनांक १३ जनवरी २०१६ को प्रातः, आकस्मिक निधन से जहाँ श्री सामवेदी जी व उनके परिवार पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है वहीं आर्य जगत् ने भी एक उदीयमान चिन्तक व आर्यसमाज की सेवा में सतत् कार्यशील सदस्य को खो दिया। यह सामवेदी जी के परिवार के साथ-साथ आर्य जगत् की भी अपूरणीय क्षति है।

दिनांक १५ जनवरी २०१६ को आर्यसमाज आदर्शनगर के सभागार में प्रिय चक्रकीर्ति जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि एवं सामवेदी परिवार को अपनी सांत्वना देने हेतु उमड़े जनसमूह के समक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने वेदशास्त्रों के आधार पर जीवन-मरण के रहस्य पर प्रकाश डालते हुए, मृत्यु की अनिवार्यता को निरूपित करते हुए कहा कि दुःख निस्संदेह विकट है परन्तु परिवार के मुख्य श्री सामवेदी स्वयं ही तत्त्ववेत्ता हैं अतः वे प्रयत्नपूर्वक स्वयं भी धैर्य धारण करें एवं परिवार को भी सांत्वना देवें। इस अवसर पर अनेक राजनेता, न्यायविद्, शिक्षाविद् एवं गणमान्य आर्यजन उपस्थित थे। राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जन सिंह जी कोठारी ने भी अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हुए भाई चक्रकीर्ति जी की परोपकारी प्रवृत्ति के संस्मरण प्रस्तुत किये। जोधपुर से पधारे आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य ने भी अपने मार्मिक उद्‌गार प्रस्तुत किये। चक्रकीर्ति जी की छोटी बिटिया ने जब अपने पिता के स्नेह के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि बच्चों के मुँह से कोई 'डिमांड' निकलती बाद में थी पूरी पहले हो जाती थी, परन्तु अब हमें कुछ नहीं चाहिए, सिवा अपने प्यारे पापा के, अतः हम कहना चाहते हैं कि- 'सात समन्दर पार से, गुड़ियों के बाजार से, अच्छी सी गुड़िया लाना, गुड़िया चाहे ना लाना पर पप्पा जल्दी आ जाना', तो उपस्थित सभी जनों की आँखें गीली हुए बिना नहीं रहीं, सम्पूर्ण वातावरण आर्द्र हो गया।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने भी अपनी सम्वेदनाओं के साथ सामवेदी परिवार को प्राप्त सैंकड़ों शोक-संवेदना पत्रों का वाचन भी किया। आर्यसमाज के पुरोहित श्री जानकी जी ने कुशल संयोजन किया। ऐसे दारुण दुःख के अवसर पर असीम व अविश्वसनीय धैर्य का प्रदर्शन करते हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी ने सभी को धन्यवाद दिया।

श्री चक्रकीर्ति सामवेदी का निधन-एक वज्राघात

-: अशोक आर्यः-

इस अवसर पर प्रो. आर.एस.कोठारी जी द्वारा प्रस्तुत काव्यात्मक श्रद्धाञ्जलि हम यहाँ दे रहे हैं-

आर्यसमाज आदर्शनगर को निज कर्मक्षेत्र बनाया था,
शिक्षण-संस्थाओं के विकास में तन-मन जिसने लगाया था।
सारे उत्तरदायित्वों को दृढ़ता से जिसने निभाया था,
अनूठे यज्ञ प्रेम को जिसने निज आदर्श बनाया था।
उपलब्धियों से भरे जीवन में कर्म का उत्कर्ष था,
चक्रकीर्ति का निष्ठा समर्पण सबके लिए आदर्श था।
'आर्य-नीति' का सम्पादन कर अनुपम कर्तव्य निभाया था,
ऋषि दयानन्द के सन्देशों को जिसने फैलाया था।
स्मृति वो हरदम हरी रहेगी, सबके दिल में बसी रहेगी,
चक्रकीर्ति की धवल कीर्ति, जाफरान सी महकेगी।
इस संसृति सागर में यह असह्य वियोग भी सहना होगा,
परीक्षा की इस घड़ी में संयम धीरज रखना होगा।
परमात्मा! है यही प्रार्थना कृपा कर सुन लीजिये,
आनन्दमय स्वर्णिम लोक में चक्रकीर्ति को स्थित कीजिए।

समाचार

स्वामी आर्यवेश जी न्यास परिसर में

अपने राजस्थान प्रवास के दौरान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी अन्य ७ साथियों सहित नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश भवन) उदयपुर में पधारे। उनके साथ भाई श्री विरजानन्द जी तथा ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र जी भी थे। स्वामी जी ने न्यास की सम्पूर्ण गतिविधियों की जानकारी प्राप्त

की और इसकी विकास यात्रा पर संतोष और प्रसन्नता प्रकट की। महल में स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा का अवलोकन कर सभी साथी अत्यन्त प्रसन्न थे। आर्यनेताओं के समक्ष स्मारक के विकास की आगामी योजना न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने प्रस्तुत की तथा प्रस्तावित ३डी थिएटर व संस्कार वीथिका की सम्पूर्ण जानकारी दी। नवलखा महल के जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण की योजना का अवलोकन कर स्वामी जी ने समस्त योजनाओं को अत्यन्त प्रेरक बताते हुए श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अध्यक्ष माननीय महाशय धर्मपाल जी एवं अन्य न्यासियों विशेष रूप से डॉलर बनियान के स्वामी श्रद्धेय दीनदयाल जी एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान आदरणीय सुरेश जी आर्य, जिनके कि योगदान के कारण ये योजनाएँ आकार ले रहीं हैं, के प्रति विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया। पूज्य स्वामी जी ने विश्वास जताया कि जब अभी भी वर्ष भर में ३०००० दर्शनार्थी यहाँ आकर लाभ प्राप्त कर रहे हैं तो निःसंदेह सभी योजनाओं के पूर्ण होने पर एक लाख से अधिक दर्शनार्थी आयेंगे इसमें सन्देह नहीं। स्वामी जी ने योजनाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने निज की ओर से (सार्वदेशिक सभा से नहीं) एक लाख रुपये देने की घोषणा की एतदर्थ न्यास की और से पूज्य स्वामी जी का हार्दिक आभार। - भवानी दास आर्य, मंत्री, न्यास

डॉ. रमेश गुप्ता न्यास परिसर में

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन दिल्ली से लौटते हुए प्रसिद्ध आर्यनेता, आर्यप्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान, न्यूजर्सी के प्रसिद्ध ख्यातनाम चिकित्सक डॉ. रमेश गुप्ता अपनी सहधर्मिणी श्रीमती अमिता जी के साथ नवलखा महल पधारे। डॉ. साहब का हमारे वा न्यास के प्रति सदैव ही आत्मीय भाव रहा है। इस अवसर पर महल स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा तथा सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ का अवलोकन कर डॉ. साहब, विशेष रूप से अमिता जी अत्यधिक प्रसन्न हुए व इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आर्य दम्पति के समक्ष स्मारक के विकास की आगामी योजना न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने प्रस्तुत की तथा प्रस्तावित ३डी थिएटर व संस्कार वीथिका की सम्पूर्ण जानकारी दी। डॉ. रमेश गुप्ता जी ने अपनी ओर से एक लाख रुपये देने के साथ इस प्रोजेक्ट के निमित्त अन्य सहयोग का विश्वास भी दिलाया। न्यास की ओर से डॉ. रमेश गुप्ता जी और अमिता जी के प्रति हार्दिक आभार। - अशोक आर्य

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

आर्य जगत् के सुख्यात विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के ७२वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में उनके ग्राम नैनोरा, जिला मन्दसौर में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन ७ से ९ जनवरी २०१६ तक किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी के अतिरिक्त आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, डॉ. सीमा श्रीमाली, आचार्य चन्द्रदेव, पंडित नरेशदत्त, डॉ. कैलाश कर्मठ, श्री भीष्म कुमार, श्री कुलदीप आर्य के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से डॉ. सोमदेव जी के जन्म दिन के अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आर्यसमाज एवं वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड का ७७वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, आबूरोड़ एवं श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड का ७७वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १ फरवरी २०१६ से ३ फरवरी २०१६ तक भव्य रूप में मनाया जा रहा है। १ व २ फरवरी के कार्यक्रम श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड के प्रांगण में तथा ३ फरवरी का कार्यक्रम दयानन्द पैराडाइज स्कूल परिसर आबूरोड में भव्य सांस्कृतिक एवं बाल-मेले के रूप में मनाया जाएगा। - मोतीलाल आर्य, प्रधान, आर्यसमाज आबूरोड

श्रीमती मनीषा पंवार जोधपुर शहर से विधायक निर्वाचित

जोधपुर के आर्य नेता श्री रामसिंह आर्य की सुपुत्री श्रीमती मनीषा पंवार जोधपुर शहर से विधायक निर्वाचित हुयीं हैं। मनीषा स्नातकोत्तर करने के उपरान्त समाजसेवा व राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय रहीं हैं। वे विगत १० वर्षों से शहर महिला कांग्रेस की अध्यक्ष रहीं हैं। आपने पार्षद के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी हैं। आर्य-पुत्री अपने कार्यकाल में यश व कीर्ति का अर्जन करते हुए उच्च से उच्च पदों के दायित्व को सम्भालें। हम सत्यार्थ सौरभ एवं न्यास परिवार की ओर से मनीषा जी एवं श्रीराम सिंह जी आर्य को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हैं। - अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष (श्रीद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर)

आर्यसमाज रावतभाटा के निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक ६ जनवरी २०१६ रविवार को श्री जे.पी. चौधरी के निर्देशन में आर्यसमाज रावतभाटा (राजस्थान) के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए। नवीन वर्ष के लिए प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के पद का दायित्व क्रमशः श्री नरदेव आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री रमेशचन्द को सर्वसम्मति से सौंपा गया। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ। - भवानी दास आर्य, मंत्री न्यास

श्री विनय आर्य ने जानी न्यास की योजनायें

गत दिनों, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के उपमंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, युवा आर्यनेता श्री विनय आर्य ने उदयपुर पधारकर जहाँ ईसवाल स्थित दयानद धाम, एम.डी.एच. परिसर का अवलोकन किया वहीं नवलखा महल पधारकर इसके जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण की सभी योजनाओं के क्रियान्वयन पर गंभीर विचार-विमर्श किया। उन्होंने योजनाओं को प्रेरक बताते हुए विश्वास दिलाया कि सम्पूर्ण आर्य जगत् इन महनीय योजनाओं को पूर्ण करने में तन-मन-धन से सहयोग करेगा। वे स्वयं भी इस ओर पूरा ध्यान देंगे। इस अवसर पर श्री विनय आर्य, फतहनगर स्थित आर्यसंस्था- महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय के संचालक श्री सुरेश मित्तल के निमंत्रण पर फतहनगर पधारे तथा वहाँ आर्यजनों को सम्बोधित किया। वहाँ से वे रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रसिद्ध आर्य विद्वान् डॉ. सोमदेव जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में नैनोरा में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने पधारे।

आर्यनेता अर्जुन देव चड्ढा का दिव्य महोत्सव सम्पन्न

चड्ढा ने किए ७५ वसन्त पूर्ण, बधाई देने वालों का तांता लगा

आर्यसमाज, कोटा, जिला के पूर्व प्रधान एवं आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक तथा आर्य नेता अर्जुन देव चड्ढा

के जीवन के ७५ वसन्त पूर्ण होने के उपलक्ष्य में परिजनों व विभिन्न प्रदेशों से पधारे आर्य नेताओं और विद्वानों की उपस्थिति में आर्यसमाज विज्ञान नगर में आयोजित दिव्य अमृत महोत्सव धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयुष्मान यज्ञ में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेदविद्वान् डॉ. विनय वेदालंकार के ब्रह्मत्व में तथा आचार्य शोभाराम आर्य एवं पंडित श्योराज वशिष्ठ के सान्निध्य में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस दौरान लोगों ने अर्जुन देव चड्ढा को साफा और माला पहनाकर अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर तथा उनका नेतृत्व करते हुए अपने जीवन को वेदानुरूप याज्ञिक रूप में चरैवेति का सन्देश देते हुए जन सामान्य को प्रेरित कर रहे हैं।

एम.डी.एच. मसाला उद्योग के प्रबन्ध निदेशक, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, श्री महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास, अजमेर और महर्षि दयानन्द गौ-संवर्धन केन्द्र, गाजीपुर के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल के द्वारा भेजे गए संदेश में कहा गया कि मैं स्वयं कोटा पधारने का इच्छुक था, लेकिन ९६ वर्ष की आयु होने के कारण तथा वायुयान की अपेक्षित व्यवस्था नहीं होने के कारण इस कार्यक्रम में नहीं पहुँच पाने का दुःख है। मैं आपके जीवन की सफलता के लिए परमपिता परमात्मा से हार्दिक कामना करता हूँ। आपको अपना आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

अमृत महोत्सव के अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने सन्देश में कहा आपके कर्मशील एवं पुरुषार्थी जीवन के ७५ वसन्त पूर्ण होने पर सम्पूर्ण आर्यजगत् की ओर से आपको बहुत-बहुत अभिनन्दन और असंख्य बधाइयाँ।

आर्य नेता अर्जुनदेव चड्ढा को उनके ७५वें जन्मदिन के अवसर पर श्रीराम केमिकल श्रमिक संघ की ओर से अध्यक्ष राजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में 'श्रमिक गौरव' के सम्मान से भी अलंकृत किया गया।

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

श्री शिव प्रकाश आर्य एवं श्री सत्यप्रिय जी के निवास स्थान (हिरणमगरी, सेक्टर-४, उदयपुर) पर दिनांक ४ से ६ जनवरी २०१६ में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य पंडित सत्यानन्द जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उदयपुर के आर्यजनों के अतिरिक्त आस पड़ौस के नर-नारियों ने भी यज्ञ लाभ प्राप्त किया। आचार्य सत्यानन्द जी के अत्यन्त प्रेरक प्रवचनों ने उपस्थित श्रोतागणों को अभिभूत कर दिया।

आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा सप्तदिवसीय व्यायाम व संस्कार शिविर

आर्यवीर दल राजस्थान के तत्वावधान में सात दिवसीय आयोजित व्यायाम व संस्कार शिविर गाँव-जावला, जिला-अजमेर में चल रहा है। जिसमें १०० से अधिक बालक-बालिकाओं को जूड़ो कराटे, लाठी व तलवार चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।

– भवदेव शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – १२/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– १२/१८ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं– श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म. प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ़ (हरियाणा), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री आचार्य उमाशंकर शास्त्री; बेगूसराय (बिहार), श्री पं. मूलचद वशिष्ठ (गोल्ड रत्न); नूह (हरियाणा), डॉ. देवेन्द्र कुमार; भीलवाड़ा (राज.), श्री रामपाल पांचाल; शाहदरा, दिल्ली।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ १७ पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

मधुमेह-घरेलू उपचार

मधुमेह चयापचयी विकारों से पनपने वाला रोग है जो शरीर की इन्सुलिन पैदा करने या इन्सुलिन का उपयोग करने की क्षमता को प्रभावित करता है। तेजी से बदल रहे परिवेश और रहन-सहन ने देश और दुनिया में मधुमेह के मरीजों की संख्या में इजाफा किया है। हालांकि खान-पान पर नियंत्रण कर व कुछ घरेलू उपचार व नुस्खों की मदद से इस रोग का सामना किया जा सकता है। चलिये जानें कैसे...

तुलसी के पत्ते- तुलसी के पत्तों में काफी एन्टीआक्सीडेंट व बाकी जरूरी तत्व मौजूद होते हैं जो इजिनॉल, मेथिल इजिनॉल और कैरियोफैलिन बनते हैं। ये सारे तत्व मिलकर इन्सुलिन जमा करने वाली और छोड़ने वाली कोशिकाओं को ठीक से काम करने में मदद करते हैं। अतः शुगर के स्तर को कम करने के लिए रोज दो से तीन तुलसी के पत्ते खाली पेट लें। आप इसका जूस भी ले सकते हैं।

गेहूँ के जवारे- गेहूँ के पौधों में रोगनाशक गुण समाए होते हैं। गेहूँ के छोटे-छोटे पौधों का रस असाध्य बीमारियों को भी मिटा सकता है। इसके रस को ग्रीन ब्लड के नाम से भी जाना जाता है। गेहूँ के जवारे का आधा कप ताजा रस रोगी को रोज सुबह-शाम पिलाने से डायबिटीज में लाभ होता है।

मेथीदाने- मधुमेह के उपचार के लिए मेथीदाने का प्रयोग भी लाभदायक होता है। यही कारण है कि दवा कम्पनियाँ भी मेथी के पावडर को बाजार में लाई हैं। उपयोग के लिए मेथीदानों का चूर्ण बना लें और रोज सुबह खाली पेट दो चम्मच चूर्ण पानी के साथ फंकी कर लें। कुछ दिनों में आपको लाभ महसूस होने लगेगा।

अलसी के बीज- अलसी के बीजों में फाइबर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो पाचन में तो मदद करता ही है साथ ही फैट और शुगर के अवशोषण में भी सहायक सिद्ध होता है। अलसी के बीजों के आटे के सेवन से मधुमेह के मरीजों में शुगर की मात्रा लगभग २८ प्रतिशत तक कम हो सकती है।

दालचीनी- दालचीनी इंसुलिन की संवेदनशीलता को ठीक करने के साथ-साथ ब्लड ग्लूकोज के स्तर को भी कम करता है। आधी चम्मच दालचीनी रोज लेने से इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता को ठीक किया जा सकता है और वजन को नियंत्रित करने में भी मदद मिलती है।

ग्रीन टी में पालीफिनोल्स काफी होते हैं। ये पालीफिनोल्स एक मजबूत एंटी-आक्सीडेंट और हाइपो-ग्लाइसेमिक तत्व होते हैं, इससे ब्लड शुगर को मुक्त करने में सहायता मिलती है और शरीर इन्सुलिन का बेहतर ढंग से इस्तेमाल कर पाता है।

नीलबदरी के पत्ते- आयुर्वेद में नीलबदरी के पत्ते का उपयोग मधुमेह के उपचार में सदियों से होता रहा है। जर्नल ऑफ न्यूट्रीशन के मुताबिक इसकी पत्तियों में एंथोसियानीडीनस काफी मात्रा में होते हैं जो चयापचय की प्रक्रिया और ग्लूकोज को शरीर के विभिन्न भागों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को बेहतर करता है।

सहजन के पत्ते- सहजन के पत्तों को मोरिंगा भी कहा जाता है। इसके पत्तों में दूध की तुलना में चार गुना अधिक कैलशियम और दो गुना प्रोटीन पाया जाता है। मधुमेह के रोगियों द्वारा सहजन के पत्तों के सेवन से भोजन के पाचन को बेहतर और रक्तचाप को कम करने में मदद मिलती है।

करेला- करेले में इन्सुलिन-पोलिपेपटाइड पाया जाता है, साथ ही ये एक ऐसा बायो-कैमिकल तत्व है जो ब्लड-शुगर को कम करने में कारगर है। इसीलिये प्राचीन काल से करेले को मधुमेह की औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। एक सप्ताह में कम से कम एक बार करेले की सब्जी खाएँ। बेहतर परिणामों के लिए खाली पेट करेले का जूस पियें।

नीम के पत्ते- भले ही नीम के पत्ते भी करेले की तरह स्वाद में कड़वे होते हैं, लेकिन बीमारियों का डॉक्टर कहे जाने वाला नीम इन्सुलिन रिसेप्टर सेंसिटिविटी बढ़ाने के साथ-साथ शिराओं व धमनियों में रक्त प्रवाह को सुचारू करता है और हाइपो ग्लासेमिक ड्रग्स पर निर्भर होने से भी बचाता है। नीम के पत्तों का जूस रोज सुबह खाली पेट लेने से डायबिटीज में बहुत लाभ होता है।

लेखक- आकाश

साभार- IGTV News

कथा सरित

गोपीचन्द की मां प्रतिदिन ध्यानावस्था में कुछ समय प्रभु चिन्तन करती थीं। एक दिन ध्यानावस्था से निवृत्त हो जैसे ही उन्होंने नेत्र खोले सामने पुत्र गोपी को खड़ा पाया। गोपीचन्द ने माता के चरणों में सिर टेक दिया।

'सत्याः सन्तु ते कामाः'- तेरी मनः कामनायें पूरी हों। माता ने आशीर्वाद दिया। गोपीचन्द नीची दृष्टि किये निस्तब्ध से खड़े हो गये। 'आज क्या समस्या है गोपी? माता ने पूछा। 'माता! अब युवराज राजकाज में सर्वथा समक्ष हो गया है। वह पुत्रवान भी हो गया है। वैदिक मर्यादानुसार अब मुझे गृहस्थाश्रम का परित्याग कर देना चाहिए। यदि आपकी आज्ञा हो तो युवराज का राज्याभिषेक कराकर मैं संन्यास ग्रहण कर लूँ तथा प्राप्त वैदिक ज्ञान का संसार में प्रचार करने में लग जाऊँ। गोपीचन्द ने कहा। माता ने हँसकर कहा 'तुमको और युवराज को बधाई।'

माता का आदेश प्राप्त कर गोपीचन्द महाराज से यतिराज बन गये। अपने सम्बन्धी भर्तृहरि से संन्यास की दीक्षा ग्रहण कर अपनी पत्नी से विदा ले माता से आशीर्वाद लेने और पहले भिक्षा ग्रहण करने की प्रार्थना करते उपस्थित हुए।

'माता भिक्षां देहि' माँ मुझे भिक्षा दो। माता स्नेह से आर्द्र हो आंचल से आँसू पोंछती हुई बोली 'गोपा तेरा मार्ग प्रशस्त हो'। उसने भिक्षा के नाम पर तीन चावल उसके भिक्षा पात्र में डाल दिये। गोपीचन्द ने आश्चर्य से पूछा माँ इन तीनों चावलों का अभिप्राय मैं नहीं समझ पाया। माँ ने कहा बेटा एक एक चावल से मैं तुम्हें तीन भिक्षा देती हूँ-

१. जैसे घर में सुरक्षित रहता था वैसे ही बाहर भी सुरक्षित रहना। गोपीचन्द बोले परन्तु यह कैसे हो सकता है? मैं अब राजा नहीं हूँ। सिपाही और मंत्री नहीं रख सकता। दुर्ग की भाँति सुरक्षित नहीं रह सकता। माँ ने कहा- सिपाही और मंत्रियों की आवश्यकता नहीं। तुम्हारा यह शरीर ही नवद्वार दृढ़ दुर्ग है। दुर्ग के नव प्रहरियों को सदा सावधान रखना। दुर्ग में सदा दिव्य दीप जलाना। दो नेत्र, दो श्रोत्र, दो नासिका, मुख, मूत्रेन्द्रिय, गुदा इन नवेन्द्रिय द्वारों से युक्त तुम्हारा शरीर दृढ़ दुर्ग है। इसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, के ५ डाकुओं से निरन्तर बचाना। उनसे बचने के लिए सत्संग का, सत विचार का, सत आहार का, सत आचरण का किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।

महाराज गोपीचन्द की माता की विलक्षण भिक्षा

२. यहाँ घर में तेरे लिए जिस तरह नाना प्रकार के भोजन तैयार होते थे और तू स्वाद से खाता था वैसे ही जंगल में भी खाना। गोपीचन्द- 'जंगल में ऐसा बनायेगा कौन?' माँ ने कहा- 'जब तू दिनभर परिश्रम करेगा, योगाभ्यास करेगा तब भूख चमकेगी और जो रूखा सूखा खायेगा इसी में तुझे रस भरे पकवानों का स्वाद आयेगा।'

३. घर में तेरे पास कितने ही नौकर थे सुन्दर झूले झूलता था। सेवक सेवा करते थे, दासियाँ गीत गाती थीं, उनकी मधुर ध्वनि से तू गहरी नींद में सो जाता था, ऐसे ही जंगल में भी गहरी नींद सोना। 'माँ यह कैसे होगा?

माँ ने कहा- 'जब तेरे विचार अच्छे होंगे। जब योग के आसनों से तेरा शरीर थक जायेगा, ध्यान लगाकर मन थक जायेगा, तब अवश्य ही तुझे गहरी निन्द्रा आवेगी। नींद नौकरों के कारण नहीं थकावट के कारण आती है।'

इस प्रकार गोपीचन्द की माता ने उन्हें सप्त आदर्शों से युक्त कवच प्रदान किया।

क. नवेन्द्रियों की जितेन्द्रियता से नवद्वार दृढ़ दुर्ग सुरक्षित रहेगा।

ख. आत्म संयम द्वारा नव प्रहरियों को सतर्क रखने हेतु नव इन्द्रिय द्वारों पर कठोर नियंत्रण रखना होगा।

ग. आत्म निरीक्षण ही दिव्य दीप होगा। घ. संतोष ही दिव्य आहार होगा।

ड़. धैर्य ही दिव्य पेय होगा। च. निश्चिन्तता ही दिव्य शैया होगी।

दृ प्रसन्नबदनता दिव्य वेश होगा।

यह थी गोपीचन्द की माता की भिक्षा की विलक्षणता जिसने महाराज गोपीचन्द को यतिवर गोपीचन्द बनाया।

साभार- हितोपदेशक

सत्यार्थ-पीयूष

एकेश्वरवाद

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के पश्चात् ईश्वर के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द द्वारा पुनर्उद्घाटित सत्य है एकेश्वरवाद। वेद से लेकर दर्शन, स्मृति, उपनिषद् आदि सभी में स्पष्ट स्वर में एकेश्वरवाद का निनाद किया गया है। निःसंदेह भारतीय परम्परा में ईश्वर से भिन्न किसी उपास्य सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है।

किन्तु वेद के पठन-पाठन की परम्परा के अभाव के काल में जब ईश्वरीय सत्य ज्ञान विस्मृत हो गया तब अज्ञानवश अथवा स्वार्थवश अनेक देवी देवताओं की सत्ता को माना जाने लगा। इनकी उपासना/पूजा स्वीकार की गई। ये प्रसन्न होकर वर देते थे, अप्रसन्न होने पर श्राप, ऐसी भ्रान्त धारणा प्रचारित की गई। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुदेवतावाद की अवैदिक धारणा सर्वप्रथम अज्ञान के कारण उत्पन्न हुई। वेद के सत्यार्थ करने की कुंजी लुप्त हो जाने से, वेदाध्ययन की आर्ष विद्या विस्मृत हो जाने से, वेद के यौगिक शब्दों के अर्थ प्रकरणानुकूल न करने से जो शब्द ईश्वर, जीवात्मा, राजा, प्रजा, सेनापति, सूर्य आदि के लिए थे उन्हें शरीरधारी चेतन देवता मान लिया गया। दूसरी और प्रत्येक वेद मंत्र के साथ उसका देवता अर्थात् प्रतिपाद्य विषय जो उसके अर्थ में सहायक होता था उनको भी चेतन देवता के रूप में स्वीकार कर लिया गया। महर्षि दयानन्द ने वेद मंत्रों के ऊपर देवता क्यों लिखे जाते हैं, इसे स्पष्ट करते हुए लिखा- 'जिस-जिस मंत्र का जो-जो अर्थ होता है वह-वह अर्थ उस-उस मंत्र के देवता शब्द से प्रकाशित हो जाता है और मंत्र का अभिप्रायार्थ विज्ञापित हो जाता है। (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)। परन्तु उपरोक्त कालखण्ड में यह सब भूल जाने से ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शिव, रुद्र, इन्द्र आदि नामों से शरीरधारी देवताओं की कल्पना कर ली गई। वेद में इन नामों के सन्दर्भ सृष्ट्युत्पत्ति के इतिहास अथवा प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन करते हैं पर पुराणों के माध्यम से इन संकेतों का अनर्थ कर देवताओं से सम्बन्धित विस्तृत इतिहास कल्पित कर लिया गया। इस प्रकार इस अज्ञान प्रसूत बहुदेवतावाद की धारणा से जब कालान्तर में कुछ लोगों की विभिन्न देवताओं के नाम पर दुकानदारी चलने लगी तो अब स्वार्थवश इसे कोई छोड़ने को तैयार न था। वरन् नये-नये देवी देवता जो प्रारम्भ में न थे कल्पित किए जाने लगे। देवी गायत्री की मूर्ति बना, मथुरा के आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा बीसवीं सदी के पाँचवे दशक के लगभग

उसे प्रचारित करने से यह तथ्य प्रमाणित होता है। इनके बीच में प्रतिद्वन्द्वता का व्यापार भी चला। श्रेष्ठता की होड़ भी लगी। इस मुनाफे वाले धन्धे को न तो पुजारी छोड़ना चाहते हैं और न कृत पापकर्मों का थोड़े से दानादि से क्षमा करवा लेने के अभिलाषी भक्तगण। अतएव सर्वथा अवैदिक धारणा आज भी फलीभूत हो रही है। विकासवाद के क्रमोन्नति के मिथ्या सिद्धान्त को प्रतिष्ठित कर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने के अभिलाषी पाश्चात्य विद्वानों को बहुदेवतावाद का हीन सिद्धान्त वेदों को निम्न कोटि के ग्रन्थ प्रमाणित करने में मनोनुकूल प्रतीत हुआ अतएव उन्होंने भी यह प्रचारित करने में कोई कसर न छोड़ी कि वेद में बहुदेवतावाद है।

पाठकगण तनिक तर्क के आधार पर भी विचार करें तो सृष्टिकर्त्ता ईश्वर एक ही सिद्ध होता है। लौकिक रचनाओं पर विचार करें तो देखेंगे कि कोई प्रसिद्ध कृति समानता के आधार पर अपने कर्त्ता के एक होने की घोषणा कर देती है। प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो की एक प्रसिद्ध कृति 'मोनालिसा' है। वैसी ही कृति को देखकर सामान्यजन तक तुरन्त कह देते हैं कि यह तो पिकासो की रचना है। अर्थात् रचना में साम्य रचनाकार के एक ही होने का प्रमाण है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

ईश्वर आत्मा में प्रेरणा करता है-

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि।
अप नः शोशुचदघम्।। - ऋ. १/९७/६।।

मनुष्यों के द्वारा सच्चे प्रेम भाव से प्रार्थना किया हुआ अन्तर्यामी ईश्वर आत्मा में सत्य के उपदेश के द्वारा इनको पाप से पृथक् करके शुभ गुण-कर्म-स्वभावों में प्रवृत्त कराता है, इसलिये यह नित्य उपासना करने योग्य है।

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE
ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANISATION
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

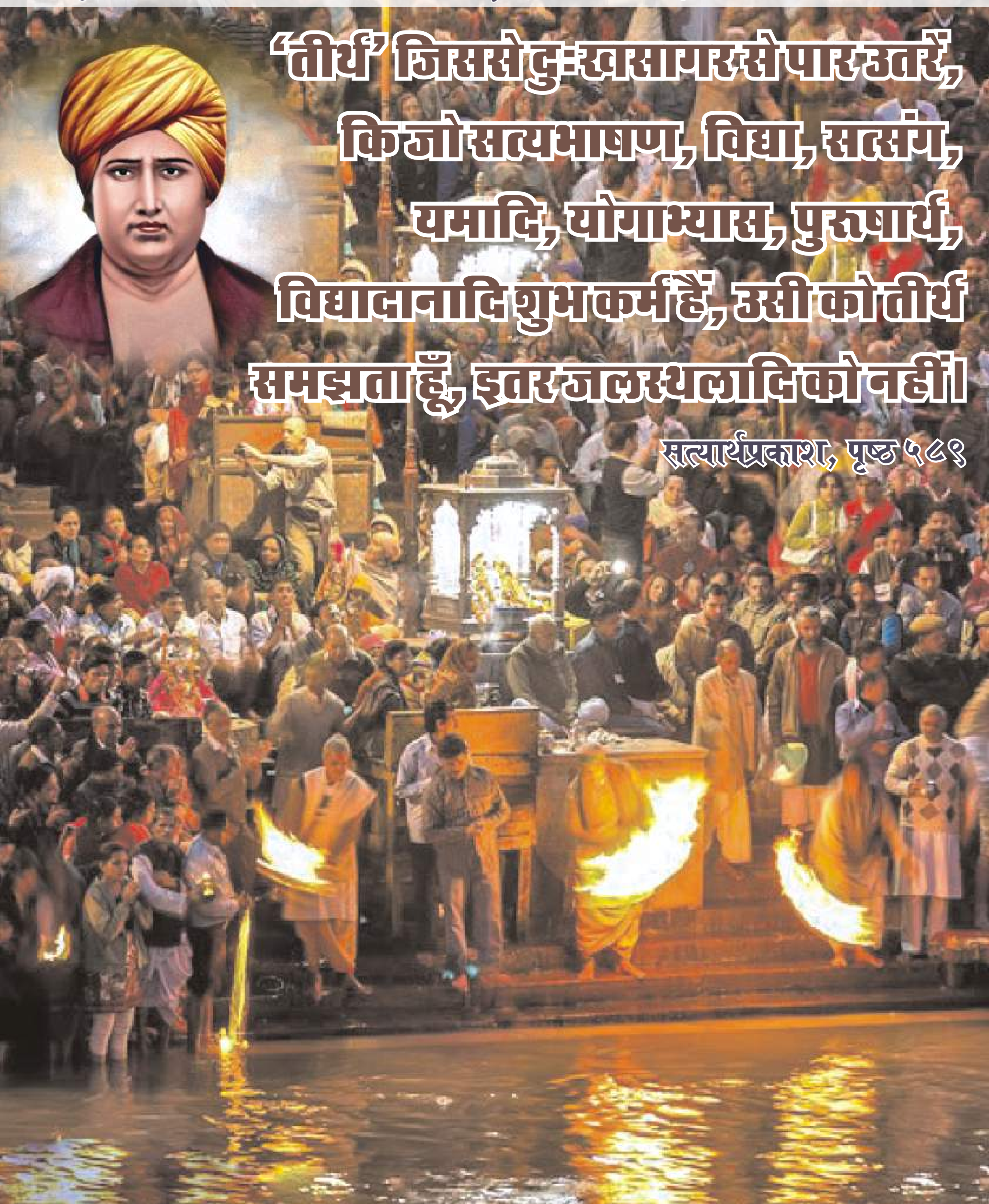

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर